पंचग्रन्थ

अध्याय एक

पंचग्रन्थ का परिचय

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2014 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., 316 लाईव ओक रोड़., कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1973, 1978, 1984, 2011 अंतरराष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। जानडरवॉन बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 192 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु सूची

I. परिचय 1

II. आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण 1

क. पूर्वधारणाएँ 2
1. प्रकृतिवाद 2
2. ऐतिहासिक विकास 3

ख. ग्रन्थकार 4
1. ईश्वरीय नाम 5
2. नकली लेख 6
3. विसंगतियाँ 6

ग. व्याख्यावादी रणनीतियाँ 7
1. स्रोतवादी आलोचनावाद 7
2. आकारवादी आलोचनावाद 8
3. परम्परावादी आलोचनावाद 9
4. ऋणात्मक आलोचनावाद 10
5. समकालीन आलोचनावाद 10

III. आधुनिक सुसमाचारवादी दृष्टिकोण 11

क. पूर्वधारणाएँ 11
1. अलौकिकवाद 11
2. ऐतिहासिक विकास 12

ख. ग्रन्थकार 12
1. बाइबल आधारित प्रमाण 13
2. मूसा आधारित लेखनकार्य की मौलिकता 14

ग. व्याख्यावादी रणनीतियाँ 20
1. विषयात्मकवादी 20
2. ऐतिहासिकवादी 20
3. साहित्यवादी 21

IV. सारांश 22

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

पंचग्रन्थ

अध्याय एक

पंचग्रन्थ का परिचय

परिचय

क्या आपने कभी सोचा कि मसीही विश्वास कैसे भिन्न हो सकता था यदि हमारे पास बाइबल न होती? अगुवे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सूचनाएँ प्रेषित करते चले जाते, परन्तु उनके विचारों का मूल्याकंन करने का कोई तरीका, कोई मापदण्ड न होता जिसके द्वारा हम विभिन्न विचारों का मूल्याकंन कर सकते थे।

यह बहुतों के लिए मूसा के समय में कुछ इसी तरह से रहा होगा। उनके पूर्वजों ने उनके कुलपतियों और आदिकालीन इतिहास के विवरणों को दूसरों तक प्रेषित किया होगा। उन्होंने कहानी को सुनाया होगा कि कैसे परमेश्वर ने इस्राएल का मिस्र में से छुटकारा किया, उन्हें व्यवस्था दी, और उन्हें प्रतिज्ञात् भूमि की ओर मार्गदर्शन दिया। परन्तु उन्हें क्या विश्वास करना था कि परमेश्वर उनकी वर्तमान और भविष्य की परिस्थितियों के साथ क्या करने जा रहा था? कैसे उन्हें इन विषयों के ऊपर विभिन्न विचारों का मूल्याँकन करना था? परमेश्वर ने उन्हें इस तरह के प्रश्नों का उत्तर बाइबल के प्रथम पाँच पुस्तकों के उनके विश्वास के मानक के रूप में दिया, इन पुस्तकों को हम आज पंचग्रन्थ के नाम से पुकारते हैं?

यह *पंचगन्थ* के ऊपर हमारी श्रृंखला का पहला अध्याय हैं, और हमने इसका शीर्षक "पंचग्रन्थ का परिचय" नाम से दिया है। इस अध्याय में हम यह परिचय देंगे कि कैसे उत्पत्ति से लेकर व्यवथाविवरण तक बाइबल की पुस्तकें इस्राएल के विश्वास के लिए मापदण्ड का कार्य करती हैं।

पंचग्रन्थ के प्रति हमारा परिचय दो मुख्य भागों में विभाजित होगा। प्रथम, हम बाइबल के इस भाग के लिए आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोणों का विवरण देंगे। ये दृष्टिकोण व्याख्याकारों के विचारों को प्रस्तुत करते हैं कि क्यों वे पवित्रशास्त्र के पूर्ण अधिकार को स्वीकार करने से इन्कार कर देते हैं। द्वितीय, हम आधुनिक सुसमाचारीय दृष्टिकोणों की खोज करेंगे, यह बाइबल आधारित विद्वानों के विचार हैं जो बाइबल को परमेश्वर की ओर से प्रेरित मानते हुए इसके पूर्ण अधिकार को स्वीकार करते हैं। आइए सर्वप्रथम पंचग्रन्थ के प्रति आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोणों को देंखे।

आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण

यद्यपि हमारे अध्याय विभिन्न दिशाओं की ओर चले जाएंगे, हमारे लिए यह जानकारी होना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि यदि अधिकांश नहीं, तो बहुत से आधुनिक आलोचनात्मक विद्वानों ने पंचग्रन्थ के अधिकार और इसके ईश्वरीय प्रेरणा प्रदत्त होने को अस्वीकार कर दिया है। उन्होंने साथ ही परम्परागत यहूदी और मसीही दृष्टिकोण को भी अस्वीकार कर दिया है जो मूसा के दिनों से प्रंचग्रन्थ के प्रति चले आ रहे हैं, जो कि इस्राएल को व्यवस्था देने वाला महान् व्यक्ति था। बहुत अधिक टिप्पणीकारों ने, शिक्षकों ने, पास्टरों ने, और यहाँ तक कि सामान्य लोगों ने उनके विचारों को समर्थन दिया है कि यह उनसे बचना पवित्रशास्त्र के गंभीर विद्यर्थियों के लिए लगभग असंभव सा है। और इसी कारण से, यह महत्वपूर्ण है कि हमारे पास कुछ ऐसी जानकारी हो कि कैसे आलोचनात्मक विद्वानों ने बाइबल के इस भाग के ऊपर कार्य किया है।

> **पिछले 150 से 200 वर्षों में, आलोचनात्मक विद्वानों ने पंचग्रन्थ के अध्ययन के लिए बहुत अधिक ध्यान दिया है। और यद्यपि हम सुसमाचारवादी उनके बहुत से दृष्टिकोणों से असहमत होंगे, यह हमारे लिए अति आवश्यक है कि हमें इस बात को बोध हो कि कहाँ पर पुराने नियम के बहुत से विद्वान सही सोच विचार में हैं जहाँ पर हम उनके सुझावों के लिए सही रूप से प्रतिक्रिया दे सकते हैं। हमें अपने बाइबल अध्ययन को इस बात की जानकारी लिए बिना कि हमारे चारों ओर क्या कुछ हो रहा है, केवल मात्र हवा में ही नहीं करना चाहिए, जैसा कि यह होता आया है। हमें अपने दृष्टिकोणों को जो कुछ भी कहीं पर कहा गया है, के प्रकाश में प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। - डा. जॉन ओस्वाल्ट**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

पंचग्रन्थ के प्रति आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोणों को समझने के लिए, हम तीन विषयों की ओर देखेंगे: प्रथम, कुछ महत्वपूर्ण पूर्वधारणाएँ जिन्होंने आलोचनात्मक दृष्टिकोणों को प्रभावित किया है; दूसरा, कुछ पंचग्रन्थ के ग्रन्थकार के ऊपर आलोचनात्मक दृष्टिकोणों को देखेंगे; और तीसरा हम कुछ महत्वपूर्ण व्याख्यावादी रणनीतियों को देखेंगे जो जिनके पीछे आलोचनात्मक विद्वान चलें हैं। आइए सर्वप्रथम हम कुछ पूर्वधारणाओं के ऊपर ध्यान दें जिन्होंने इन दृष्टिकोणों को प्रभावित किया है।

पूर्वधारणाएँ

अधिकांश समय, बाइबल के इस भाग के ऊपर आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण सीधे ही पश्चिमी यूरोप की सत्रहवीं और अठारहवीं सदी की आत्मजागरणकाल के बौद्धिक बहाव से बह कर आते हैं।

हमारे प्रयोजनों की प्राप्ति के लिए, हम दो महत्वपूर्ण पूर्णधारणाओं के ऊपर ध्यान केन्द्रित करेंगे जो कि आत्मजागरणकाल में विकसित हुई। इन दोनों दृष्टिकोण ने गहनता के साथ पंचग्रन्थ के आलोचनात्मक व्याख्याकारों को प्रभावित किया है। प्रथम, हम प्रकृतिवाद की अवधारणा के ऊपर ध्यान देंगे। और द्वितीय, हम इस्राएल के विश्वास के ऐतिहासिक विकास के बारे में पूर्णधारणाओं को देखेंगे। आइए प्रकृतिवाद से आरम्भ करें।

प्रकृतिवाद

संक्षेप में, आत्मजागरणकाल में प्रकृतिवाद विद्वानों की प्रमुख मान्यता थी कि यदि अलौकिक वास्तविकताएँ अस्तित्व में हैं, तो उनका पहचानयोग्य कोई प्रभाव दृश्य संसार में दिखाई नहीं देता है। और इस कारण से, इसके लिए शिक्षण अनुसंधान में कोई स्थान नहीं था। उन्नीसवीं सदी के मध्य में, प्रकृतिवाद पश्चिमी शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में प्रभावी रहा, जिसमें मसीह विश्वास के प्रति अध्ययन भी सम्मिलित है। बाइबल आधारित अध्ययनों में प्रकृतिवाद का एक मुख्य प्रभाव यह था कि जाने-पहचाने विद्वानों ने भी पंचग्रन्थ के परमेश्वर द्वारा प्रेरित होने की एक लम्बे समय से चली आ रही यहूदी और मसीही विश्वास की मान्यता को अस्वीकार कर दिया था। और इस कारण से, बहुतों ने पंचग्रन्थ को कुछ इन तरीकों से अध्ययन किया कि उन्होंने सामान्य रूप से इसे प्राचीन संस्कृतियों के धार्मिक लेखों के रूप में मान लिया। इस दृष्टिकोण में, पंचग्रन्थ सभी तरह की त्रुटियाँ, विरोधाभासों और यहाँ तक कि इतिहास का जानबूझकर गलत प्रस्तुतिकरण और झूठे धर्मविज्ञान को, मात्र अन्य मानवीय लेखों के जैसे अपने में संभाले हुए है।

यह बहुत ही अधिक रूचिकर है कि, जैसा कि पूर्वधारणाएँ जिन्होंने प्रकृतिवाद को आधुनिक विद्वानों से छुटकारा देने में मार्गदर्शन दिया कि वे पंचग्रन्थ के अधिकार को और इसके प्रेरणा-प्रदत्त होने को अस्वीकार कर दें, उन्होंने साथ ही इस्राएल के विश्वास के ऐतिहासिक विकास के निश्चित दृष्टिकोणों की ओर मार्गदर्शन दिया।

ऐतिहासिक विकास

उन्नीसवीं सदी के आने तक, प्रकृतिवाद ने जिस बात की ओर मार्गदर्शन किया उसे हम "प्रकृतिकवादी इतिहासवाद" कह कर पुकार सकते हैं। यह वह मान्यता थी कि किसी भी विषय को समझने के लिए सबसे उत्तम तरीका यह समझना है कि वह कैसे समय के व्यतीत होने के साथ प्राकृतिक कारणों के द्वारा विकसित हुआ है। उन्नीसवीं सदी के जीव वैज्ञानिकों ने स्वयं को इस बात की व्याख्या के लिए समर्पित कर दिया कि कैसे पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति हुई और यह कैसे सदियों के व्यतीत होने के साथ विकसित हुआ है। भाषाविदों ने मनुष्य की भाषाओं के ऐतिहासिक घटनाओं का पता लगाया है। पुरातत्व वैज्ञानिकों ने प्राचीन मानवीय समाजों की पृष्ठभूमियों और प्रगतियों की पुनर्निमित किया है। और धर्म के क्षेत्र के विद्वानों ने विश्व के धर्मों की प्राकृतिक, ऐतिहासिक विकास के वर्णन को देने की प्राथमिकता दी है।

कुल मिलाकर, आरम्भिक आधुनिक पश्चिमी विद्वानों ने विश्व के धर्मों के विकास को मानवीय समाज के विकासों को अपनी समझ के साथ पंक्तिबद्ध करते हुए किया है। उदाहरण के लिए, यह सामान्य रूप से मान लिया गया था कि प्राचीन लोग सबसे पहले आदिम आदिवासी समाज में निर्मित किए गए थे जो आत्मावाद को, ऐसे विश्वास को प्रयोग में लाते थे कि प्रकृति में विद्यमान वस्तुएँ आत्माओं के साथ सम्बद्ध है। समय के व्यतीत होने के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

साथ, आदिम आदिवासी समाज विस्तृत रूप से प्रधानों के अधीन निर्मित हो गए जो कि बहुदेववाद, कई देवताओं में विश्वास होने के ऊपर को प्रयोग में लाते थे। जब प्रधानों के अधीन समाज संघ के रूप में एकत्रित हुए, तब धर्म बहुदेववाद से एकैकाधिदेववाद, ऐसा विश्वास कि एक देवता अन्य देवताओं के मध्य में महान् था। अन्त में, विशाल राज्यों और साम्राज्यों के विकास होने के साथ, सामर्थ्यशाली साम्राज्यों और याजकों ने अकसर उनकी राज्यों को बहुदेववाद से एकेश्वरवाद, अर्थात् एक देवता में विश्वास की ओर मोड़ दिया। और इस प्राकृतिक ऐतिहासिक दृष्टिकोण में, ऐसा तब तक नहीं हुआ जब तक इस उच्च विकसित अवस्था में धर्म के मानदण्ड संहिताबद्ध होने लगे, या लिखे जाने लगे। इस समय से पहले, धर्म एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक केवल मौखिक और अनुष्ठानिक पंरपराओं के माध्यम से प्रेरित होता रहा।

अब, हमें ध्यान देना चाहिए कि बीसवीं सदी के अन्त में नृविज्ञानियों ने व्यापक रूप से इस विचार को अस्वीकार कर दिया है कि धर्म इस तरह के साधारण तरीके से विकसित हुए हैं। परन्तु इन दृष्टिकोणों ने बड़ी गहनता से उन तरीकों को प्रभावित किया है जिनमें आधुनिक अवधि के आरम्भ में बाइबल आधारित विद्वानों ने पंचग्रन्थ का अध्ययन किया है। और वे निरन्तर यहाँ तक कि आज के समय में भी बाइबल आधारित अध्ययन को प्रभावित करते हैं।

> **जिसे हम "आलोचनात्मक अध्ययन" कह कर पुकारते हैं वह अकसर यह मान लेता है कि पुराने नियम मान्यताओं के विकास को आदि मानव से होते हुए, धर्म के कम जटिल रूप से अधिक पेचीदे स्वरूप में, जिसमें पिछला पहले की अपेक्षा अधिक उत्तम है, प्रदर्शित करता है। यहाँ पर इसके बारे में कुछ बातें हैं जिन्हें हम कह सकते हैं। एक बात, सकारात्मक रूप में कहना, हम कह सकते हैं कि इस बात में प्रगति है कि परमेश्वर कैसे स्वयं को प्रकट करता है। बाइबल इसे दिखाती है, जिसे हम "सचेत विकास" कह कर पुकारते हैं जहाँ पर परमेश्वर के बारे में धर्मसिद्धान्त और विषय और विचार बीच से आरम्भ होते हुए पूरे स्वरूप में वृद्धि करते हैं, और इस तरह से बाइबल यहाँ तक कि अपने स्वयं के प्रगति करते हुए सन्देश के बारे में बात करती है। और इसलिए, हाँ, बाइबल के और पंचग्रन्थ के भीतर आकार की प्रगति है। यह परमेश्वर के प्रकाशन का आरम्भ से लेकर इसकी पूर्णता तक की ओर चलती हुई एक प्रगति है, यदि आप चाहे, तो आप फूल के खिलने में लिए हुए समय-की चूक के चित्र की कल्पना कर सकते हैं। परन्तु, नकारात्मक रूप से कहना, आलोचनात्मक विद्वान सामान्य रूप एक विकासवाद या मानव के इतिहास के विकास के दृष्टिकोण को थामे रहते हैं जो कि प्रगति की अनिवार्यता को स्वीकार करता है...अब, जो कुछ हमें करना है वह यह है कि हमें अपने चारों के संसार को यह देखने के लिए देखना है प्रगति की अनिवार्यता एक बहुत बड़ी मिथक है। हाँ, हम प्रगति करते हैं, परन्तु साथ ही जब हम प्रगति करते हैं, हम कुछ छोड़ देते हैं। इस तरह से, आधुनिकवाद के अभिमान के बारे में कुछ बात ऐसी है जो कि किसी पुरातन बात को अधिक निम्न स्तर के रूप में देखता है, जबकि सच्चाई में, यह एक दार्शनिक धारणा है, यह ऐसा कुछ नहीं है जो कि स्वयं बाइबल के भीतर पाया जाता हो। - रेव्ह. माईकल जे. गोल्डो**

विश्व के धर्मों के ऊपर आरम्भिक आधुनिक दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से उस तरीके से भिन्न है जिसमें बाइबल इस्राएल के विश्वास के विकास को दर्शाती है। पंचग्रन्थ इस्राएल के विश्वास को निरन्तर एकेश्वरवाद में प्रगट करती है। आदम और हव्वा से लेकर, नूह, कुलपतियों से होते हुए, इस्राएल के गोत्रों के प्रधानों तक, विश्वासयोग्य लोगों ने एक सच्चे परमेश्वर कि जो की सभी का सृष्टिकर्ता है, आराधना की। और, जितना अधिक हम उत्पत्ति से जानते हैं, इन आरम्भिक अवस्थाओं में, यह सच्चा, एकेश्वरवादी विश्वास एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक और अनुष्ठानिक परम्पराओं के माध्यम से प्रेषित होता चला गया।

तब, पंचग्रन्थ के अनुसार, एक निर्णायक परिवर्तन मूसा के दिनों में घटित हुआ। उस समय, इस्राएल के विश्वास के मानदण्ड संहिताबद्ध होने लगे। मूसा ने इस्राएल को एक जाति के रूप में, पहले वाचा की पुस्तक में परमेश्वर की व्यवस्था और दस आज्ञाओं को लिखते हुए, और, जैसा कि हम बाद में देखेंगे, बाकी बचे हुए पंचग्रन्थ की रचना इस्राएल के विश्वास का मार्गदर्शन करने के लिए रचते हुए, तैयार किया। इसलिए, बाइबल के अनुसार,

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

इस्राएल का धर्म मूसा के समय से लिखी हुई पवित्र रचनाओं की ओर, इस्राएल में राजा और मन्दिर के आने से बहुत पहले से उन्मुख था।

जैसा कि यह जाना-पहचाना बाइबल का लेख स्पष्ट है, आधुनिक आलोचनावाद इस समयावधि को प्राकृतिकवादी इतिहासवादी की धारणाओं के कारण असंभव होना मानते हैं। आधुनिक आलोचनावादी विद्वानों ने इस्राएल के विश्वास के बाइबल आधारित चित्रण को खण्डित कर दिया है। और उन्होंने इसकी कहानी के पुनर्निर्माण सभी आदिम धर्म कैसे उत्पन्न हुए के आधुनिक विचारों की पुष्टि करने के लिए किया है। इस दृष्टिकोण में, इस्राएल के प्रगतिहासिक पूर्वजों ने आदिवासी आत्मवाद को आलिंगन किया था। तब, इस्राएल के कुलपति बहुदेववाद की ओर मुड़ें जब उनके गोत्र प्रधानों के अधीन एकत्र समाज में मिल गए। इस दृष्टिकोण में, यदि वहाँ पर मूसा था जिसने इस्राएल का मार्गदर्शन मिस्र से बाहर निकलने के लिए किया था, तो जिन इस्राएलियों का उसने मार्गदर्शन किया था वे गोत्रों के एक संघ से कुछ ज्यादा विकसित थे जो कि एकैकाधिदेववाद के माध्यम से चित्रित किए गए हैं। और, पवित्रशास्त्र के विपरीत, आलोचनात्मक व्याख्याकार यह विश्वास करते हैं, कि इस सामाजिक विकास की अवस्था में, यह किसी के लिए भी असंभव सी बात होती कि वह इस्राएल के विश्वास के मानदण्डों को लिख लेता। इस तरह के लिखित मानदण्डों केवल इस्राएल की राजशाही के आरम्भिक काल के समय में ही प्रगट हो सकते थे, जब इस्राएल के राजा और याजकों ने इस्राएल के लिए विश्वास को नियंत्रित करना चाहा। इसलिए, आलोचनात्मक विद्वानों के अनुसार, राजशाही के इस समय से आगे इस्राएल का धर्म एक पुस्तक के धर्म के रूप में परिवर्तित हो गया।

अब क्योंकि हमने पवित्रशास्त्र और इस्राएल के विश्वास के ऐतिहासिक रूप से विकसित होने की ओर आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोणों को देख लिया है, हमें हमारे दूसरे, घनिष्ठता से निकटता लिए हुए विषय की ओर मुड़ना चाहिए। कैसे इन दृष्टिकोणों ने पंचग्रन्थ के ग्रन्थकार के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोणों को प्रभावित किया है।

ग्रन्थकार

जैसा कि हमने देखा है, कि आलोचनात्मक व्याख्याकारों ने यह विश्वास किया है कि इस्राएलियों का विश्वास केवल इस्राएल में राजशाही के समय संहिताबद्ध होने के द्वारा आरम्भ हुआ। और इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि इस धारणा का अर्थ यह है कि मूसा का पंचग्रन्थ को लिखने में कोई हाथ नहीं था। इसकी अपेक्षा, यह पुस्तकें एक लम्बी, जटिल प्रक्रिया का परिणाम थी जो कि प्राचीन मौखिक परम्पराओं के साथ आरम्भ होती हुई राजशाही की अवधि के मध्य में विभिन्न दस्तावेजों के रूप में एकत्र हो गई। और यह केवल इस्राएल के बन्धुवाई के मध्य और पश्चात् हुआ कि ये दस्तावेज संपादित हुए और जैसा हम इन्हें आज जानते हैं, पंचग्रन्थ के रूप में संकलित हुए। अब, जब पवित्रशास्त्र के विद्यार्थी सबसे पहले यह सुनते हैं कि बहुत से विद्वान पंचग्रन्थ के इस लम्बे विकास में विश्वास करते हैं, तो वे अकसर सदैव आश्चर्य में पड़ जाते हैं कि इन्हें कौन सा प्रमाण समर्थन देता है।

हम पंचग्रन्थ के ग्रन्थकार के प्रति इस दृष्टिकोण को आलोचनात्मक विद्वानों के द्वारा प्रदान किए हुए तीन मुख्य प्रमाणों में सारांशित करेंगे। हम पंचग्रन्थ में ईश्वरीय नामों में पाई जाने वाली भिन्नता के साथ आरम्भ करेंगे।

ईश्वरीय नाम

आरम्भिक आलोचनात्मक व्याखाकारों ने यह ध्यान दिया है कि पंचग्रन्थ में परमेश्वर के नाम के लिए भिन्नताएँ है। और उन्होंने यह तर्क दिया है कि ये विभिन्नताएँ इस्राएल के विश्वास के लम्बे विकास के प्रमाण थे। उदाहरण के लिए, कई बार पंचग्रन्थ सामान्य रूप में इब्रानी भाषा के शब्द אֱלֹהִים *(इलोहीम)* या "परमेश्वर" के लिए उपयोग करता है। अन्य समयों पर, परमेश्वर को יהוה *(यहोवा)* या "प्रभु" कह कर पुकारा गया है। पंचग्रन्थ इन दोनों शब्दों को आपस में जोड़ देता है और अन्य शब्दों के साथ में भी, जैसे, *"यहोवा इलोहीम"* या "प्रभु परमेश्वर" और *"यहोवा यिरे,"* या "प्रभु जो प्रबन्ध करता" है। परमेश्वर को *"एल एल्योन"* या सर्वोच्च परमेश्वर भी कह कर पुकारा गया है और *"एल शदई"* जिसे अकसर "सर्वशक्तिमान् परमेश्वर" में अनुवाद किया जाता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

अब यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि जबकि पंचग्रन्थ परमेश्वर के लिए विभिन्न नामों को दर्शाता है, यह असामान्य बात नहीं हो सकती है। बीसवीं सदी में प्राचीन निकट पूर्वी धर्मों में ईश्वरीय नामों के लिए किए गए अनुसंधान ने यह संकेत दिया है कि उन्हीं लेखकों ने उनके देवताओं के लिए भी विभिन्न नामों को उपयोग किया था। परन्तु फिर भी, आरम्भिक आलोचनात्मक विद्वानों ने यह सोचा है कि पंचग्रन्थ में परमेश्वर के नामों में आई भिन्नता ने एक लम्बे समय के इतिहास के सकंलन को प्रकट किया है। उन्होंने विश्वास किया कि परमेश्वर के लिए उपयोग किए जाने वाले भिन्न नाम यह संकेत देते हैं कि एक स्रोत दूसरे के साथ जोड़ दिया गया था, और अतंत: जो पंचग्रन्थ के रूप में दिखाई दिया।

जब आप पुराने नियम में से पढ़ रहे होते हैं, तो आपको इस बात पर ध्यान देने में ज्यादा समय नहीं लगता है कि परमेश्वर के लिए विभिन्न नाम हैं। उत्पत्ति 1 में परमेश्वर नाम *इलोहीम* है। उत्पत्ति 2 में, अचानक से, आपके पास *यहोवा* का नाम आता है। आलोचनात्मक दृष्टिकोण इसे सुसमाचारीय विचाधारा की अपेक्षा बहुत ही भिन्न तरह से समझते हैं। एक आलोचनात्मक विद्वान कहेगा कि यह भिन्न स्रोत से आते हैं...सुसमाचारवादी होने के नाते, मैं सोचता हूं कि हमें एक कदम पीछे जाना चाहिए और बड़े चित्र को समझना चाहिए। परमेश्वर *इलोहीम* है, और वह *यहोवा* है। *इलोहीम* सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जो संसार के ऊपर है, सृष्टिकर्ता है, यह वह जिसको संसार की सभी जातियाँ सर्वोच्च शाक्ति के रूप में पहचानती हैं, कि वह सर्वोच्चत्तम व्यक्ति है। परन्तु इस्राएल के साथ वाचा के सम्बन्ध में, वह स्वयं को अपने बहुत ही व्यक्तिगत् नाम, *यहोवा* से प्रगट करता है। वह "मैं हूँ" जो उसके लोगों के लिए होगा और उसके लोगों के साथ रहेगा। और यह वाचा का नाम है क्योंकि इस्राएल परमेश्वर के चुने हुए लोग हैं।
- डा. डेविड टैली

ईश्वरीय नामों में विभिन्नता होने के साथ ही, कई अलोचनात्मक विद्वानों ने पंचग्रन्थ के ग्रन्थकार के ऊपर अपने विचारों को जिसे वह "नकली लेख" कह कर पुकारते हैं, की ओर ध्यान खींचते हुए समर्थन दिया है।

नकली लेख

यह देखना कठिन नहीं है कि पचंग्रन्थ के कई संदर्भ एक दूसरे के समान हैं। परन्तु आलोचनात्मक व्याख्याकारों ने यह तर्क दिया है कि यह संदर्भ विभिन्न लोगों के समूहों की विभिन्न मौखिक परम्पराओं को, और उस प्रक्रिया को जिसके माध्यम से यह लेख पंचग्रन्थ में लिखे गए को प्रदर्शित करते हैं।

उदाहरण के लिए, व्याख्याकारों ने अकसर इस बात की ओर संकेत किया है जिसे वे उत्पत्ति 1:1-2:3 और उत्पत्ति 2:4-25 में लिखे हुए "सृष्टि किए जाने" दो विवरणों के नाम से पुकारते हैं। उन्होंने साथ ही अब्राहम और इसहाक के मध्य उत्पत्ति 12:10-20; और 26:7-11 में पाई जाने वाली समानताओं की ओर भी संकेत दिया है जिसमें उन्होंने झूठ बोला था और अपने पत्नियों को खतरे में डाल दिया था। परन्तु पारम्परिक यहूदी और मसीही व्याख्याकारों ने इन समानताओं का उचित तरीकों से विवरण दिया है। परन्तु आलोचनात्मक विद्वानों ने इस बात को पकड़े रखा है कि ये रचनाएँ विभिन्न मौखिक परम्पराओं को प्रस्तुत करती हैं जिन्हें लिखा गया था और पंचग्रन्थ में सम्मिलित कर लिया गया।

तीसरे स्थान पर, आलोचनात्मक विद्वानों ने यह संकेत दिया है जिसे वह पंचग्रन्थ में विसंगतियाँ कहते हैं। और वे यह दावा करते हैं कि ये तथाकथित विसंगतियाँ बाइबल के इस भाग के ग्रन्थकार के प्रति उनके जटिल पुनर्निर्माण को समर्थन देती हैं।

विसंगतियाँ

उदाहरण के लिए, उन्होंने अकसर निर्गमन 12:1-20 और व्यवस्था विवरण 16:1-8 में फसह के नियमों के मध्य मे विभिन्नताओं के ऊपर ध्यान दिया है। और उन्होंने निर्गमन 20:1-17 और व्यवस्था विवरण 5:6-21 में वर्णित दस आज्ञाओं के मध्य में पाई जाने वाली विभिन्नताओं की ओर संकेत दिया है। एक बार फिर से, पारम्परिक यहूदी और मसीही व्याख्याकारों ने यह दिखाया है कि कैसे यह और अन्य विभिन्नताओं को मेल मिलाप हो सकता

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

है। परन्तु आलोचनात्मक व्याख्याकारों ने इन्हें मौखिक परम्पराओं और लिखित स्रोतों के लम्बे, जटिल इतिहास के रूप मे देखा जैसे कि आज पाए जाने वाले पंचग्रन्थ में आकर इक्ट्ठे निर्मित हो गए हैं।

> **जब आप बाइबल पढ़ते हैं और विशेषकर पंचग्रन्थ, तब आपका सामना विभिन्न प्रकार के साहित्य सामग्री से होता है। और कई बार जब आप पढ़ते हैं, तब आप ऐसी बातों को पढ़ते हैं, उदाहरण के लिए, जब आप उत्पत्ति की पुस्तक को पढ़ना आरम्भ करते हैं तो आपको उत्पत्ति 1:1-2:3 मिलता है...हमारे पास एक ऐसे परमेश्वर का चित्र है जो कि सृष्टि की व्यवस्था को सात दिनों में निर्मित कर रहा है। परमेश्वर अपने बोलने के द्वारा सृष्टि करता है और यह परमेश्वर के शक्तिशाली होने, परमेश्वर के सृष्टिकर्ता होने, परमेश्वर के द्वारा मनुष्य को अपने स्वरूप में निर्मित करने के बारे में एक शक्तिशाली कथन है। और इसके पश्चात् अगले अध्याय, 2:4-25 में, हमारे पास सृष्टि की एक और कहानी है, यह एक तरह से एक के बाद दूसरी का आना है। जब आप इसके ऊपर देखते हैं, तो कुछ लोग विरोधाभासों को देखेंगे क्योंकि अब हम देखते हैं कि परमेश्वर को प्रभु परमेश्वर कह कर पुकारा गया है। इस की अपेक्षा कि वह परमेश्वर जो वस्तुओं को अस्तित्व में आने के लिए बोलता था, हमारे पास ऐसा परमेश्वर है जो कि वास्तव में नीचे उतर कर आ रहा है; वह लोगों की सृष्टि करता है। यह कहता है कि वह मनुष्य को मिट्टी से, पहले पुरूष के रूप में निर्मित करता है। और तब वह पहले पुरूष में से स्त्री को निकालता है। इस तरह से, आप परमेश्वर को देखते हैं, एक अदृश्य सृष्टिकर्ता परमेश्वर होने की अपेक्षा, परमेश्वर लगभग, मानवीय भाषा में, पूरी तरह से नीचे उतर कर, एक तरह से अपने स्वयं के हाथों से कुछ बना रहा है...परन्तु इस अन्य कहानी के होने के द्वारा, जो कि अंतत: एक पूरक के रूप में है, न कि विरोधाभास के रूप में...और एक बार फिर से, हमें सदैव स्मरण रखना चाहिए कि क्या वहाँ पर वास्तव में विरोधाभास हैं, क्या हम वास्तव में देखते हैं कि प्राचीन लोगों ने इन बातों को नहीं देखा होगा? मेरे कहने का अर्थ है कि, यही समझने की बात है। वह मूर्ख लोग नहीं थे। यह एक भिन्न समय था, एक भिन्न संस्कृति थी, परन्तु उनके पास फिर भी दिमाग था, और उन्होंने अपने ज्ञान में इन बातों को इक्ट्ठा संभाले रखा। और इसी तरह से दूसरी कहानी हमें एक ऐसे परमेश्वर को देती है जो कि अधिक निकट है। हम इसे धर्मविज्ञान में एक ऐसा परमेश्वर कह कर पुकारते हैं जो कि सर्वव्यापी है, ऐसा परमेश्वर जो कि उसकी सृष्टि में आ जाता है...और मैं सोचता हूँ कि पवित्रशास्त्र के पठन् को विश्वासयोग्य तरीका इसे शंकालु तरीके से पढ़ने में नहीं है अपितु अंतत: इसे समझ के अर्थ में पढ़ना है। आप जानते हैं, मेरे पास प्रश्न हो सकता है, परन्तु यह विश्वास को समझने के लिए खोज है, और अंत में, मैं विश्वास करता हूँ जो कुछ बाइबल में है वह वही कुछ है जिसे परमेश्वर चाहता है कि बाइबल में हो, और पाठक होने के नाते मेरा कार्य इसको ध्यान से सुनने का है, विशेषकर उन स्थानों को जहाँ मुझे परेशानी हो सकती है, यह देखने का है कि परमेश्वर दो भिन्न बातों को कई बार पास-पास रखने के द्वारा वास्तव में क्या कहना चाह रहा है। परन्तु हमें इसके लिए कृतज्ञ होना चाहिए क्योंकि भिन्न समयों में भिन्न स्थानों पर दो भिन्न प्रकार के चित्र किसी अन्य समय की अपेक्षा किसी समय बहुत अधिक अर्थपूर्ण बात कर सकते हैं। - डा. ब्रायन डी. रस्सेल**

अब क्योंकि हमने आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोणों को पूर्वधारणाओं और ग्रन्थकार की विचारधारा के संदर्भ में देख लिया है, इसलिए हमें उन कुछ मुख्य व्याख्यावादी रणनीतियों को देखना चाहिए जिन्हें आलोचनात्मक विद्वानों ने उपयोग किया है जब उन्होंने पंचग्रन्थ का अध्ययन किया।

व्याख्यावादी रणनीतियाँ

इन विषयों को सारांशित करने के लिए बहुत से तरीके हैं, परन्तु हम आधुनिक आलोचनात्मक विद्वानों की पाँच मुख्य व्याख्यावादी रणनीतियों को स्पर्श करेंगे। हम इन रणनीतियों के ऊपर उनके विकसित होने के आदेश में स्रोतवादी आलोचना से आरम्भ करते हुए ध्यान देंगे।

स्रोतवादी आलोचनावाद

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

स्रोतवादी आलोचना, या जैसे इसे सबसे पहले पुकारा गया था, "साहित्यिक आलोचना," का उद्गम के. एच. ग्राफ के द्वारा 1866 ईस्वी सन् में प्रकाशित पुराने नियम की *ऐतिहासिक पुस्तकों* के शीर्षक के नाम से लिखे हुए लेखनकार्य से हुआ है। इसका और अधिक शुद्धिकरण जाने-पहचाने व्याख्याकार, जूलियस वैलहुसेन ने 1883 में प्रकाशित *इस्राएल के इतिहास का प्राक्कथन* नामक अपनी अपनी पुस्तक में किया है।

स्रोतवादी आलोचक यह विश्वास करते हैं कि पंचग्रन्थ मौखिक परम्पराओं के द्वारा, ठीक अन्य प्राचीन धार्मिक लेखों की तरह ही विकसित हुआ है। परन्तु वे अपना ध्यान पंचग्रन्थ के भागों की पहचान करने और इनकी व्याख्या करने के ऊपर लगाते हैं जिन्हें वे विश्वास करते हैं कि ये स्वतंत्र सूत्रों से निकल कर आए हैं जो इस्राएल की राजशाही अवधि के मध्य में उभरे थे।

वैलहुसेन की शब्दावली का अनुसरण करते हुए, पंचग्रन्थ का सबसे प्राचीन दस्तावेजी स्रोत, आरम्भिक राजशाही में लिखा हुआ मिलता है, जिसे सामान्य रूप से यहोवावादियों के "जे" के नाम से जाना जाता है। इसे इस नाम से इसलिए जाना जाता है क्योंकि संदर्भों में परमेश्वर के लिए मुख्य नाम की पहचान इस लिखे हुए स्रोत *"यहोवा"* से आती है – जिसे जर्मनी भाषा में अक्षर "जे" के नाम से जाना जाता है, जो कि बहुत कुछ अंग्रेजी के अक्षर "जे" अर्थात् जेहोवा से मिलता है। "जे" संदर्भ उत्पत्ति की पुस्तकों और निर्गमन में इधर उधर बिखरे पड़े हैं। स्रोतवादी आलोचक ने यह तर्क दिया है कि पंचग्रन्थ के ये अंश मौलिक रूप से यहूदा में सुलेमान के दिनों में लगभग 950 ई. पूर्व लिखे गए थे। इस दृष्टिकोण में, "जे" संदर्भ एक ऐसे दस्तावेज को प्रस्तुत करता है जो कि प्राचीन समयों के बारे में बात करता है और इस्राएल के धर्म और समाज का केंद्रीकरण और नियमीकरण यरूशलेम में दाऊद की राजवंश के द्वारा किए जाने को समर्थन देता है।

पंचग्रन्थ का दूसरे लिखित स्रोत को इलोहीमवादियों के लिए "इ" माना गया है, क्योंकि परमेश्वर को इन संदर्भ में सामान्य रूप में *इलोहीम* कह कर पुकारा गया है। "इ" सामग्री भी उत्पत्ति और निर्गमन में प्रगट होती है। इस सिद्धान्त के अनुसार, "इ" स्रोत उत्तर में, जब इस्राएल का विभाजन दो भागों में हो गया था तब लगभग 850 ई.पू लिखे गए थे। "इ" मूलपाठों ने उत्तरीय, भविष्यवाणियों के दृष्टिकोणों को बढ़ावा दिया जो कि दाऊद के राजवंश के लिए महत्वपूर्ण थे।

तीसरे साहित्यिक स्रोत "डी" या व्यवस्थावादी अर्थात् अंग्रेजी में डूयुटरनोमी कह कर पुकारा गया है। इसका यह नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि "डी" सामग्री मौलिक रूप से व्यवस्थाविवरण की पुस्तक और पंचग्रन्थ में अन्य भागों में केवल कभी कभी प्रगट होती है। इस सामग्री की तिथि लगभग 622 ई. पू., योशिय्याह के धर्मसुधार और 586 ई. पू., बाबुल के द्वारा यरूशलेम का पतन कर दिए जाने के मध्य में मानी जाती है। एक सामान्य सिद्धान्त में, "डी" लेवियों के कार्य को प्रस्तुत करता है जो कि उत्तरी इस्राएल से देशद्रोही के रूप में यहूदा भेज दिए गए थे। यह लेवी दाऊद के घराने के प्रति निष्ठावान् थे, परन्तु साथ ही इसके प्रति आलोचक भी थे।

अन्त में, पंचग्रन्थ के विकसित होने में एक चौथे साहित्यिक स्रोत को सामान्य रूप से "पी" के रूप में पुकारा जाता है जो कि याजकीय अर्थात् अंग्रेजी में प्रीस्टिय लेखक या लेखकों के लिए उपयोग होता है। एक सामान्य पुनर्निर्माण में "पी" याजकों का एक ऐसा समूह था जिन्होंने लेवियों की पुस्तक और रचा और संकलित किया और पंचग्रन्थ के अन्य अंशों को लगभग 500 और 400 ई. पू., संपादित किया। इस पुनर्निर्माण के अनुसार, "पी" ने पंचग्रन्थ में प्रत्यक्ष रूप में इस्राएल के बन्धुवाई में से बचे हुए लोगों के वापस लौट आने के पश्चात एक सामाजिक आदेश और आराधना को निर्मित किया।

अब, बीसवीं सदी के मध्य में, सक्षम विद्वानों ने स्रोतवादी आलोचना के शायद ही किसी पहलू को चुनौती दिए रहित छोड़ दिया हो। परन्तु फिर भी, इन दृष्टिकोणों के अवशेष अभी भी पंचग्रन्थ की लगभग प्रत्येक महत्वपूर्ण टीका में प्रकट हो जाते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

आकारवादी आलोचनावाद

पंचग्रन्थ की ओर आलोचनावादी रणनीतियों की दूसरी मुख्य रणनीति "आकारवादी आलोचना" के रूप में जानी जाती है।

आकारवादी आलोचना पुराने नियम के अध्ययन के लिए विशेष अध्ययन क्षेत्र के रूप में हरमॉन गुनकेल के 1901 में लिखे हुए लेखनकार्य *उत्पत्ति की दन्तकथाएँ* के साथ आरम्भ हुआ। गुनकेल और जिन्होंने उसका अनुसरण किया ने स्रोतवादी आलोचना के मुख्य सिद्धान्तों को स्वीकार किया, परन्तु उन्होंने पंचग्रन्थ के आरम्भिक पहलू के विकास के ऊपर ध्यान केन्द्रित किया है। पंचग्रन्थ के लिखे हुए स्रोतों के ऊपर ध्यान देने की अपेक्षा, स्रोतवादियों ने उस बात पर ध्यान केन्द्रित किया जिसे उन्होंने विश्वास किया कि यह वह मौखिक परम्पराएँ थी जो कि इस्राएल की राजशाही के समय से पूर्व घटित हुई थी।

वह समय जब स्रोतवादी आलोचना लोकप्रिय थी, विद्वानों ने अनपढ़ आदिवासी संस्कृतियों में कार्यरत् मौखिक परम्पराओं के तरीकों के ऊपर ध्यान दिया। स्रोतवादी आलोचक इन अध्ययन का उपयोग करते हैं जब वह शुद्ध, गतिशील, पूर्व-साहित्यिक परम्पराओं की खोज करते हैं जिन्होंने पंचग्रन्थ के दस्तावेजी स्रोतों की ओर मार्गदर्शन किया।

स्रोतवादी आलोचना का तरीका मूल रूप से द्वि-भागी है: एक तरफ तो, स्रोतवादी आलोचकों ने मौखिक स्रोतों, शैलियों, जैसे मिथक, कथा-कहानियाँ, किवदंतियाँ, रोमांस, दन्तकथाएँ और दृष्टान्तों की खोज करने के लिए संदर्भों का विश्लेषण किया है। दूसरी तरफ, उन्होंने उन शौलियों को इन मौखिक परम्पराओं के सास्कृतिक संदर्भों जिन्हें *"स्टिज् इम लिबेन"* या "जीवन की परिस्थितियों" के नाम से जाना जाता है। इन परिस्थितियों के संदर्भों में आराधना, आदिवासी रहन सहन, पारिवारिक निर्देश, स्थानीय न्यायालय, और ऐसी ही अन्य बातें सम्मिलित हैं।

उदारण के लिए, एक बड़ी सँख्या में स्रोतवादी आलोचकों ने उत्पत्ति 32:22-32 में, याकूब का पनीएल के ऊपर किए हुए मल्लयुद्ध के विवरण का अध्ययन, एक ऐसी कहानी के रूप में किया है, जो कि मूल रूप से एक प्राचीन जनजाति के उत्सव के समय अन्धेरे में आग के चारों ओर बैठ के सुनाई गई थी। उन्होंने तर्क दिया है कि यह आरम्भ में यब्बोक नदी के घाट पर घटित हुए अलौकिक, जादुई घटनाओं की कहानियों से निकल कर आई हैं। इस पुनर्निर्माण में, यह बहुत बाद में हुआ जब कहानी को एक आदिवासी व्यक्ति याकूब के नाम से जोड़ा गया।

यह सुनिश्चित हो, कि आकारवादी आलोचनावाद उचित रूप से बाइबल आधारित मूलपाठों की औपचारिक विशेषताओं और संरचनाओं की महत्वपूर्णता पर जोर देते हैं। परन्तु, स्रोतवादी आलोचनावाद की तरह ही, स्रोतवादी आलोचनावाद की भी कई विभिन्न तरीकों से चुनौती दी गई है। आकारवादी आलोचनावाद को चुनौतीयाँ मुख्य रूप से बाइबल आधारित मूलपाठों की पृष्ठभूमि के संदर्भों और मौखिक आकारों के चिन्तन किए हुए कहानी के पुनर्निर्माण के ऊपर केन्द्रित हैं। परन्तु फिर भी, हम यहाँ तक कि आज भी अभी तक आकारवादी आलोचनावाद को कई आलोचक विद्वानों को पंचग्रन्थ जैसा कि यह पवित्रशास्त्र के मापदण्ड अर्थात् कैनन में पाया जाता है, की ओर मुड़ने की अपेक्षा, प्रश्न से भरे हुए कहानी के पुनर्निर्माण की ओर मुड़ते हुए पाते हैं।

परम्परावादी आलोचनावाद

एक तीसरा तरीका जिसमें आलोचक विद्वानों ने पंचग्रन्थ की व्याख्या की है को अकसर परम्परावादी आलोचनावाद या परम्परा-ऐतिहासिक आलोचनावाद कह कर पुकारा जाता है।

स्रोत और आकारवादी आलोचनावाद के निष्कर्षों के ऊपर निर्माण करते हुए, परम्परावादी आलोचनावादी इस बात पर ध्यान केन्द्रित करते हैं कि कैसे आदिकालीन मौखिक परम्पराएँ और लिखे हुए मूलपाठ जटिल धर्मवैज्ञानिक और राजनीतिक दृष्टिकोणों में विकसित हुए। अग्रणी विद्वान जैसे मार्टिन नोथ द्वारा 1948 में प्रकाशित *पंचग्रन्थीय परम्पराओं का इतिहास* नामक पुस्तक और 1957 में ग्रेहार्ड वॉन राड द्वारा प्रकाशित *पुराने नियम का इतिहास* नामक पुस्तक में, यह बताया है कि कैसे पंचग्रन्थ ने विभिन्न परम्पराओं के प्रभावों को प्रकाशित किया है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

अन्य बातों के साथ, परम्परावादी आलोचनावादियों ने उस बातों की पहचान की जिसमें उन्होंने विश्वास किया कि यह पंचग्रन्थ में प्रतिद्वन्द्व करते हुए धर्मवैज्ञानिक मान्यताएँ का एक समूह हैं। उन्होंने पता लगाया है कि कैसे पंचग्रन्थ विभिन्न परम्पराओं के विषयों जैसे सृष्टि, कुलपति, मिस्र में से निर्गमन, और प्रतिज्ञात् भूमि पर विजय की दृढ़ता को प्रदर्शित करते हैं। उन्होंने साथ ही कुछ बातों का उल्लेख करते हुए जैसे इस्राएल के गोत्रों, दाऊद के सिंहासन, और यरूशलेम के मन्दिर से सम्बन्धित दृष्टिकोणों की खोज भी की है। और उन्होंने विश्वास किया है कि धर्मविज्ञान की ये जटिल धाराएँ बड़ी गहनता के साथ उन कई मुख्य विषयों को प्रभावित करती हैं जो कि पंचग्रन्थ में प्रगट होते हैं।

एक बार फिर से, परम्परावादी आलोचनावाद के बहुत से विशिष्ठ निष्कर्षों के ऊपर वर्षों से प्रश्न किए जाते रहे हैं। परन्तु फिर भी, हम इस दृष्टिकोण के अंशों को देख सकते हैं जब पुराने नियम के व्याख्याकार इस्राएल में विभिन्न तरह की परम्पराओं को प्रदर्शित करते हुए संदर्भों की बात करते हैं जो या तो विरोधाभासी हैं या फिर यहाँ तक कि वे एक दूसरे के साथ प्रतिद्वन्द्व करती हैं।

ऋणात्मक आलोचनावाद

एक चौथा मुख्य तरीका जिसमें आलोचनात्मक व्याख्याकारों ने पंचग्रन्थ के विकास में उपयोग किया है को ऋणात्मक आलोचनावाद कह कर पुकारा गया है। जैसा कि शब्द "ऋणात्मक" संकेत देता है, यह रणनीति इस बात पर ध्यान केन्द्रित करती है कि कैसे काल्पनिक दस्तावेज आज के समय में जाने जाने वाले पंचग्रन्थ में रखने के लिए संपादित किए गए थे।

ऋणात्मक आलोचनावाद बीसवीं सदी में नए नियम के अध्ययन के साथ नए नियम में सुसमाचारों में विभिन्नताओं की व्याख्या करने के तरीके के साथ आरम्भ हुआ। ऋणात्मक आलोचक यह विश्वास करते हैं कि ये भिन्नताएँ पहले से लिए हुए अभिलेखों का पुन: आकार देने और संपादन के परिणामस्वरूप आई हैं।

इसी तकनीक को पंचग्रन्थ के ऊपर भी लागू किया गया था। यह प्रयास किए गए कि कैसे विभिन्न लेखकों ने पहले से लिखे हुए "जे", "इ" और "डी" के स्रोतों का अध्ययन किया और उस समय तक इन्हें आपस में बुनते चले गए जब तक पंचग्रन्थ इसे पूर्ण आकार में निर्मित नहीं हो गया। यह दृष्टिकोण विशेष रूप से उत्तरोत्तरकालीन "पी" के संपादन कार्य के ऊपर ध्यान केन्द्रित करती है।

ऋणात्मक आलोचनावाद के पास उत्पत्ति की पुस्तकों को व्यवस्था विवरण के माध्यम से जैसा कि वह आज बाइबल में दिखाई देती हैं, की ओर ध्यान खींचने का लाभ प्राप्त है। परन्तु ऋणात्मक आलोचनावाद ने स्रोत, आकार और परम्परावादी आलोचनावाद के निष्कर्षों के साथ कुछ ज्यादा विशेष बात नहीं की।

समकालीन आलोचनावाद

इस समय, हमें कुछ ऐसी प्रवृत्तियों का उल्लेख करना चाहिए जन्हें समकालीन आलोचनावाद के रूप में, या पंचग्रन्थ के प्रति अधिक प्रभावशाली वर्तमान की आलोचना के रूप में चित्रित किया जाता है।

वर्तमान के दशकों में, कई अग्रणी व्याख्याकारों ने पुरानी आलोचनावादी ऐतिहासिक कहानी के पुनर्निर्माणों से थोड़ा आगे जाने की चाह की है। इसकी अपेक्षा, उन्होंने पंचग्रन्थ की उल्लेखनीय धर्मवैज्ञानिक एकता और पारम्परिक इब्रानी मूलपाठ की गहनता के ऊपर ध्यान केन्द्रित किया है। इन दृष्टिकोणों ने विभिन्न आकारों को लिया है जिनमें से कुछ का नाम – शास्त्रीय आलोचनावाद, पवित्रशास्त्र के मापदण्ड सम्बन्धी आलोचनावाद, नया साहित्यिक आलोचनावाद। परन्तु वह सभी पंचग्रन्थ की व्याख्या करने के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हैं जैसा कि यह हमें यहूदी आराधानालयों और कलीसिया में दिया गया था। पंचग्रन्थ के नियम अपने पूर्ण आकार में इनके पुराने आलोचनात्मक दृष्टिकोणों की अपेक्षा ज्यादा प्रतिज्ञा देने वाले हैं। परन्तु केवल समय ही हमें बताएगा की कौन सा फल ये अधिक समकालीन दृष्टिकोण उत्पन्न करेंगे।

"पंचग्रन्थ के परिचय" में अभी तक, हमने बाइबल के इस भाग के प्रति आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोणों के ऊपर ध्यान केन्द्रित किया है। अब हमें हमारे ध्यान को इस अध्याय के दूसरे मुख्य विषय: पंचग्रन्थ के ऊपर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

आधुनिक सुसमाचारवादी दृष्टिकोण की ओर मोड़ना चाहिए। कैसे आज के सुसमाचारवादी बाइबल की पहली पाँच पुस्तकों का अध्ययन करते हैं?

आधुनिक सुसमाचारवादी दृष्टिकोण

आपको स्मरण होगा कि हमारे प्रयोजनों को प्राप्ति कि लिए हमने सुसमाचारवादियों की परिभाषा ऐसे दी है जो पवित्रशास्त्र में सम्पूर्ण अधिकार के होने को मानते हैं। यह कहना अनावश्यक है, कि सुसमाचारवादियों ने सदैव इस दृढ़ता से उन्हीं तरीकों से अक्षरश: लागू किया है। परन्तु जैसा कि हम देखेंगे, पवित्रशास्त्र के अधिकार के प्रति यह समर्पण अभी भी सुसमचारवादियों को पंचग्रन्थ का अध्ययन आधुनिक आलोचनावादी विद्वानों की अपेक्षा बहुत ही भिन्न तरीके से करने का मार्गदर्शन देना है।

हम पंचग्रन्थ के ऊपर आधुनिक सुसमाचारवादी दृष्टिकोणों को हमारी आरम्भिक विचार विमर्श के साथ प्रस्तुत करेंगे। सर्वप्रथम, हम उन कुछ महत्वपूर्ण पूर्वधाराणाओं को देखेंगे जिन्हें हमारा मार्गदर्शन करना चाहिए। दूसरा, पंचग्रन्थ के ग्रन्थकार के ऊपर सुसमाचारीय दृष्टिकोणों के ऊपर ध्यान देंगे। और तीसरा, हम कई मुख्य सुसमाचारवादी व्याख्यात्मक रणनीतियों का सर्वेक्षण करेंगे। आइए सर्वप्रथम हम कुछ महत्वपूर्ण सुसमाचारवादी पूर्वधारणाओं को देंखे।

पूर्वधारणाएँ

हम स्वयं को दो पूर्वधारणाओं तक सीमित रखेंगे जो कि आलोचानात्मक और सुसमाचारवादी दृष्टिकोणों में तुलना करती हैं। सर्वप्रथम, हम हमारे विश्वास को अलौकिकवाद में जाँच करेंगे। और दूसरा, हम इस्राएल के विश्वास के ऐतिहासिक रूप से विकसित होने के बारे में हमारी पूर्वधाराणाओं को देखेंगे। आइए सर्वप्रथम हम हमारे विश्वास को अलौकिकवाद में देखें।

अलौकिकवाद

"अलौकिकवाद" एक तरह से हमारी आधुनिक भाषा में "प्राकृतिक" से भिन्न है क्योंकि, इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि यदि हम परमेश्वर में विश्वास करते हैं, तो हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर सभी बातों के द्वारा कार्य करता है परन्तु जबसे स्कॉटिश सन्देहवादी दार्शनिक डेविड ह्यूम ने इस तरह की भिन्नता की है और कहा है कि, "ठीक है, हमारे पास अलौकिक गतिविधियों में विश्वास करने का कोई कारण नहीं है," तब से यह एक विवाद का विषय रहा है। और यह कई कारणों में से एक है जिसमें बहुत से लोगों ने बाइबल की विश्वसनीयता के विरूद्ध तर्क दिए हैं, क्योंकि वे ऐसा कहते हैं कि, ठीक है, बाइबल आश्चर्यकर्मों से भरी हुई है और हम जानते हैं कि आश्चर्यकर्म घटित नहीं होते हैं। ठीक है, हम क्यों नहीं जानते कि आश्चर्यकर्म घटित नहीं होते हैं? ऐसा क्यों, क्योंकि डेविड ह्यूम ने इसे "प्रमाणित" किया है। और आप पीछे की ओर जाएँ और उसके इस तर्क को देंखे, और उसका तर्क क्या बहुत अच्छा नहीं है। तथ्य तो यह है कि उसके तर्क का एक बिन्दु यह है कि हमारे पास कोई प्रत्यक्षदर्शी नहीं है, कौन – विश्वसनीय प्रत्यक्षदर्शी – जो आश्चर्यकर्मों के घटित होने का दावा करें, निश्चित रूप से आज नहीं हैं जब हम जाँच कर सकते हैं। और फिर भी, यहाँ तक कि ह्यूम के दिनों में भी, वहाँ पर विश्वसनीय प्रत्यक्षदर्शी थे कि परमेश्वर अभी भी आश्चर्यजनक बातों को कर रहा है, और आज भी हमारे पास उनकी एक अविश्वसनीय सँख्या है...और यदि वे आज घटित होते हैं...तो हम यह कितनी ज्यादा अपेक्षा कर सकते हैं कि वे उद्धार के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थानों में घटित हुए जब परमेश्वर कार्य कर रहा था। - डा. क्रेग ऐस. कीनर

पवित्रशास्त्र हमें शिक्षा देता है कि परमेश्वर सामान्य रूप से इतिहास का दिशा निर्देश इस तरह से देता है कि जो समझने वाली पद्धतियों का पालन करता है। तर्क और विज्ञान परमेश्वर की ओर से दिए हुए वरदान हैं जो

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

हमें इन पद्धतियों को समझने में सहायता करते हैं। और इसी कारण से, सुसमाचारवादी ठीक ही पंचग्रन्थ के ऊपर तार्किक और वैज्ञानिक अनुसंधान के मूल्य का उपयोग करते हैं। परन्तु ठीक उसी समय, यीशु के अनुयायियों को यह भी जानना चाहिए कि परमेश्वर ने स्वयं को संसार में अलौकिक तरीके से सम्मिलित किया और निरन्तर करता चला जा रहा है। परमेश्वर इस तरीके से कार्य करता है जो कि सामान्य प्रक्रियाओं और प्राकृतिक कारणों के बिना, परे और यहाँ तक कि इनके विरूद्ध हैं। यह मान्यता पंचग्रन्थ के प्रति हमारे अध्ययन को कई तरीकों से प्रभावित करती है। परन्तु विशेष रूप से, यह हमें सुनिश्चित करती है कि परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र की इन रचनाओं को प्रेरित और निरीक्षण किया। इसलिए वे पूरी तरह से उसके अधिकारिक और विश्वसनीय शब्द हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है, हमें सदैव सचेत रहना चाहिए कि हमारी व्याख्याओं को जो कुछ पंचग्रन्थ कह रहा है कि साथ न उलक्षा दें। हमारी व्याख्याएँ सदैव सुधार के अधीन होनी चाहिए परन्तु सुसमाचारीय दृष्टिकोण के बिन्दु से, जो कुछ पंचग्रन्थ वास्तव में सत्य के प्रति दावा करता है, वह सत्य है क्योंकि यह परमेश्वर के द्वारा प्रेरित है।

अलौकिकवाद के बारे में हमारी पूर्वधारणाएँ सीधे हमारा मार्गदर्शन इस्राएल के विश्वास के ऐतिहासिक विकास के बारे में पूर्वधारणा की ओर करती है।

ऐतिहासिक विकास

जैसा कि हमने देखा है, आधुनिक आलोचनावादी विद्वानों ने यह तर्क दिया है कि इस्राएल का विश्वास प्राकृतिक तरीकों से उन्हीं बातों के साथ विकसित हुआ जैसा कि निकट पूर्व में अन्य धर्मों के साथ हुआ था। परन्तु सुसमाचारवादी यह मानते हैं कि इस्राएल का विश्वास विशेष ईश्वरीय प्रकाशनों के द्वारा विकसित हुआ है। परमेश्वर ने वास्तव में स्वयं को सीधे ही पुरूष और स्त्रियों के ऊपर, आदम और फिर नूह से आरम्भ करते हुए प्रकट किया। और इसने साथ ही इस्राएल के कुलपतियों, अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ बातचीत की। उसने मूसा को जलती हुई झाड़ी में से सम्बोधित किया। उसने सीनै पहाड़ के ऊपर अपनी व्यवस्था को प्रकाशित किया। इस तरह के प्रकाशन इस्राएल के विश्वास को निकट पूर्व के अन्य धर्मों की अपेक्षा भिन्न तरीके से विकसित होने का कारण बने। यह सुनिश्चित हो, कि परमेश्वर का सामान्य अनुग्रह और शैतान के प्रभाव ने इस्राएल के विश्वास और अन्य जातियों के धर्मों में समानताओं की ओर नेतृत्व किया। परन्तु इस्राएल का विश्वास सामान्य रूप से केवल स्वाभाविक तरीके से उत्पन्न नहीं हुआ था। इसकी अपेक्षा, परमेश्वर ने इस्राएल के आरम्भिक विश्वास जैसा कि पंचग्रन्थ हमें शिक्षा देता है, के विकसित होने में अलौकिक रूप से नेतृत्व किया।

हमने आधुनिक सुसमाचारवादी दृष्टिकोणों और पूर्वधारणाओं के ऊपर ध्यान दिया है जो कि पंचग्रन्थ के ऊपर महत्वपूर्ण दृष्टिकोणों के विपरीत हैं। इन दृष्टिकोण पंचग्रन्थ के ग्रन्थकार के ऊपर परस्पर विरोधी मान्यताओं की ओर नेतृत्व प्रदान किया है। आलोचनात्मक विद्वान इस विचार को अस्वीकार कर देते हैं कि पंचग्रन्थ मूसा के दिनों में से आ सकता है। परन्तु समुसमाचारवादी निरन्तर लम्बे समय से चले आ रहे यहूदी और मसीही मान्यताओं की पुष्टि करते हैं कि पंचग्रन्थ मूसा की ओर से आया है।

ग्रन्थकार

पंचग्रन्थ के लेखक के ऊपर सुसमाचारीय दृष्टिकोणों की जाँच करने के लिए, हम दो दिशाओं की ओर देखेंगे। सर्वप्रथम, हम इस दृष्टिकोण के ऊपर कुछ बाइबल आधारित प्रमाणों के ऊपर ध्यान देंगे। और दूसरा, हम यह विवरण देंगे कि कैसे आधुनिक सुसमाचारवादी यह विश्वास करते हैं जिसे "मूसा आधारित लेखनकार्य की मौलिकता" कह कर पुकारा जाता है। आइए मूसा के ग्रन्थकार होने के लिए कुछ बाइबल आधारित प्रमाणों के साथ आरम्भ करें।

बाइबल आधारित प्रमाण

पवित्रशास्त्र परम्परावादी दृष्टिकोण के लिए अपेक्षा से अधिक बाइबल आधारित प्रमाणों को थामे हुए है कि मूसा ही पंचग्रन्थ का लेखक था। परन्तु समय की कमी होने के कारण, हम बाइबल के तीन विशेष भागों में से केवल तीन संदर्भों के ऊपर ही ध्यान, नए नियम में दिए हुए प्रमाणों में से आरम्भ करते हुए देंगे। सुनिए लूका 24:44 को जहाँ पर यीशु ने ऐसे कहा:

अवश्य है कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी हों (लूका 24:44)।

यहाँ पर, यीशु सम्पूर्ण पुराने नियम को तीन भागों में उल्लेख करता है, बहुत कुछ उसके अपने समय के यहूदियों की तरह: मूसा, भविष्यद्वक्ता और भजन संहिता। इन पदसंज्ञाओं के माध्यम से, लूका स्पष्ट रूप से संकेत देता है कि यीशु ने पंचग्रन्थ, या तोराह को मूसा के साथ सम्बद्ध किया है।

यीशु ने यूहन्ना 5:46 में पंचग्रन्थ के लेखक के रूप में मूसा का उल्लेख किया है जहाँ उसने ऐसा कहा कि:

क्योंकि यदि तुम मूसा का विश्वास करते हो, तो मेरा विश्वास भी विश्वास करते, इसलिए कि उसने मेरे विषय में लिखा है (यूहन्ना 5:46)।

यीशु की स्वयं की गवाही के अतिरिक्त, नए नियम के अन्य संदर्भ पंचग्रन्थ के विशेष अंशों की ओर उल्लेख करते हैं कि ये मूसा की ओर से आए हैं। हम इसे मरकुस 7:10, यूहन्ना 7:19, रोमियों 10:5, और 1 कुरिन्थियों 9:9 जैस स्थानों में देखते हैं।

सच्चाई में, नया नियम के द्वारा मूसा के लेखक होने का समर्थन पुराने नियम की गवाही के ऊपर ही आधारित है। और कई अवसरों पर, पुराने नियम की पुस्तकें मूसा को पंचग्रन्थ के साथ सम्बन्धित करती हैं। उदाहरण के लिए, 2 इतिहास 25:4 को सुनिए:

[अमस्याह] ने उस आज्ञा के अनुसार किया, जो मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखी है (2 इतिहास 25:4)।

इसी जैसे अन्य पुराने नियम के संदर्भ मूसा को पंचग्रन्थ के साथ सम्बन्धित करते हैं, जिसमें 2 इतिहास 35:12; एज्रा 3:2 और 6:18; और नहेम्याह 8:1 और 13:1 जैसे वचन सम्मिलित हैं।

हमें यह भी ध्यान देना चाहिए कि नए नियम और पुराने नियम की साक्षी सामान्य रूप में इस बात के ऊपर आधारित है कि पंचग्रन्थ स्वयं इसके लेखक के बारे में क्या कहता है। दृढ़ता से बोलना, अधिकांश पंचग्रन्थ अज्ञात् लेखक से लिखा गया है। केवल व्यवस्थाविवरण की पहले पहले वचन को छोड़कर, मूसा का नाम इन पुस्तकों में से किसे से भी आरम्भ या अन्त में इस तरीके से नहीं आया है जो इसके लेखक होने का संकेत देता हो। परन्तु यह निकट पूर्व में कोई असामान्य बात नहीं थी। न ही यह पवित्रशास्त्र में असामान्य है। सच्चाई तो यह है, कि पंचग्रन्थ स्वयं सत्यापित करते हुए स्पष्ट कथनों को देता है कि मूसा ने इसे परमेश्वर के प्रकाशन से प्राप्त किया और वही पंचग्रन्थ के संकलन के लिए उत्तरदायी था। उदाहरण के लिए, निर्गमन 24:4 हमें कहता है कि मूसा ने वाचा की पुस्तकों को लिखा जो निर्गमन 20:18-23:33 में पाई जाती हैं। लैव्यव्यवस्था 1:1-2 में सीखते हैं कि लैव्यव्यवस्था में अनुष्ठानों को मूसा के माध्यम से दिया गया है। व्यवस्था विवरण 31:1 और 3:24 में, हमें कहा गया है कि मूसा ने ऐसे उपदेशों को दिया जो कि व्यवस्था विवरण की पुस्तक में पाए जाते हैं। संक्षेप में, पंचग्रन्थ साफ और स्पष्टता से दावा करता है कि मूसा सक्रिय रूप से पंचग्रन्थ के मुख्य अंशों की विषयवस्तु को प्राप्त करने और उन्हें संप्रेषित करने में सम्मिलित था।

यह और अन्य बाइबल आधारित प्रमाण विवरण देते हैं कि क्यों सुसमाचारवादी बड़ी दृढ़ता के साथ पंचग्रन्थ के लेखक के बारे में आलोचनावादी कल्पनाओं के विरुद्ध खड़े होते हैं। यह स्पष्ट है कि, पवित्रशास्त्र आलोचनात्मक रूप से कहानी के पुनर्निर्माण को निर्मित करने का समर्थन नहीं करता है जो यह कल्पना करता है कि पंचग्रन्थ मूसा के जीवन के बहुत समय पश्चात लिखा गया था। यदि हम पुराने और नियम की साक्षी का अनुसरण करें, तो हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि हमें पंचग्रन्थ को मूसा के साथ सम्बन्धित करना चाहिए।

पंचग्रन्थ स्वयं को मूसा आधारित लेखनकार्य होने के लिए स्वयं ही प्रस्तुत करता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि निर्गमन से लेकर व्यवस्थाविवरण तक, मूसा इसका एक मुख्य चरित्र है। और मूलपाठ स्वयं को विस्तृत रूप में मूसा के दिनों से होने के द्वारा प्रस्तुत करता है। हमें निर्गमन में कहा गया है, उदाहरण के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

लिए, निर्गमन 25 में, कि यहोवा ने मूसा को वाचा की पुस्तकों को लिखने के लिए कहा, जो कि निर्गमन 21 से लेकर 23 तक हैं। हमें लैव्यव्यवस्था की पुस्तक में कहा गया है कि हमने मूसा के द्वारा प्रस्तुत किए गए उपदेशों और व्यवस्थाओं की एक श्रृंखला को प्राप्त किया है। मूसा गिनती की पुस्तक में एक मुख्य चरित्र है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में हमने उपदेशों की एक श्रृंखला को पाया है जिसे मूसा ने दिए थे, और हमें कई बार व्यवस्था विवरण की पुस्तक के भीतर कहा गया है कि मूसा ने इस खण्ड को लिखा और याजकों के हाथ में सौंप दिया। अब, आवश्यक नहीं है कि इसका अर्थ यह हो कि मूसा ने एक तरह से पूरी व्यवस्था विवरण की पुस्तक को लिखा हो, परन्तु व्यवस्था विवरण की पुस्तक स्वयं हमें बताती है पुस्तक के विशेष अंश, पुस्तक का एक बड़ा भाग, मूसा ने ही लिखा और तब इसके याजकों के हाथ में सौंप दिया। इस तरह से, उदाहरण के लिए, व्यवस्था विवरण में, चाहे वही इसका लेखक या कहानी बोलने वाला या नहीं, हमारे पास कम से कम 90% पुस्तक का भाग है जिसे स्वयं मूसा ने ही लिखा है। - डा. गोर्डन एच. जॉनस्टोन

मूसा के लेखक होने की मूल अवधारणा जिसे बाइबल आधारित प्रमाणों के द्वारा समर्थित किया गया है, को देख लेने के पश्चात्, हमें एक दूसरे सरोकार की ओर मुड़ना चाहिए। मूसा आधारित लेखनकार्य होने के प्रति आधुनिक सुसमाचारवादियों के क्या अर्थ हैं?

मूसा आधारित लेखनकार्य की मौलिकता

जैसा कि सुसमाचारवादियों ने पंचग्रन्थ के ऊपर आलोचनावादी दृष्टिकोणों के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त की है, उन्होंने अपनी प्रतिक्रियाओं को विभिन्न तरीकों से परिष्कृत किया है। परन्तु बीसवीं सदी के मध्य में, पंचग्रन्थ का आवश्यक रूप से "मूसा आधारित लेखनकार्य" का होना एक सामान्य बात बन गया।

सुनिए उस तरीके को जिसमें एड्वर्ड जे. यंग ने अपने दृष्टिकोण को 1949 में प्रकाशित *पुराने नियम का परिचय* नामक अपनी पुस्तक में दिया है:

जब हम यह पुष्टि करते हैं कि मूसा ने...पंचग्रन्थ को लिखा, तो हमारे कहने का अर्थ यह नहीं है कि उसने ही आवश्यक रूप से इसके प्रत्येक शब्द को लिखा है... [उसके द्वारा] पहले से विद्यमान दस्तावेजों को उपयोग किया हो सकता है। साथ ही, ईश्वरीय प्रेरणा के अधीन, हो सकता है कि इसमें उत्तरोत्तरकाल में और अतिरिक्त लेख और यहाँ तक कि संशोधनों को जोड़ दिया गया हो। तथापि, वास्तविक और आवश्यक रूप से, यह मूसा के द्वारा ही लिखा गया है।

अब, सुसमाचारवादियों ने मूसा के लेखक होने के विवरणों को विभिन्न तरीकों से समझ लिया है। परन्तु इस मात्रा या उस मात्रा में, जब हम पंचग्रन्थ के आवश्यक रूप से "मूसा आधारित लेखनकार्य" होने के लिए बोलते हैं तो यह हमें तीन तथ्यों का स्मरण दिलाता है जिसे हमें सदैव हमारे ध्यान में रखना चाहिए: उन स्रोतों को जिन्हें मूसा ने उपयोग किया, उस प्रक्रिया को जिसके द्वारा पंचग्रन्थ को लिखा गया, और पंचग्रन्थ का अद्यतन जो कि मूसा के दिनों के पश्चात किया गया। आइए उन स्रोतों के ऊपर पहले ध्यान देते हुए आरम्भ करें।

मूसा – पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि परमेश्वर ने स्वयं को मूसा के माध्यम से विभिन्न तरीकों से प्रकट किया। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने वास्तविक दस आज्ञाओं को अपने स्वयं की ऊंगली के द्वारा लिखा। और वाचा की पुस्तक में वह व्यवस्था पाई जाती है जिसे परमेश्वर ने मूसा को सीनै पर्वत के ऊपर दिया था। परन्तु पवित्रशास्त्र के अन्य भागों में, ऐसे संकेत मिलते हैं कि मूसा ने पंचग्रन्थ को लिखने में अन्य स्रोतों का भी उपयोग किया।

एक तरफ तो, हो सकता है कि शायद उसने विभिन्न मौखिक परम्पराओं का उपयोग किया होगा। उदाहरण के लिए, अपने पूरे बचपन में मूसा ने कुछ बातों को अपनी जन्म देने वाली माता और विस्तारित परिवार के द्वारा अपने आरम्भिक शैश्वावस्था में सीखा होगा। इसके अतिरिक्त, हम निर्गमन 18:17-24 में देखते हैं कि मूसा अपने मिद्यानी ससुर, यित्रो के अनुदेशों के प्रति अच्छी तरह से ग्रहणशील रहा था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

जब भी हम पंचग्रन्थ के किसी भी भाग की पृष्ठभूमि की मौखिक परम्परा के बारे में बात करते हैं, जिसमें आदिकालीन इतिहास या कुछ अन्य भाग भी सम्मिलित हैं, तो यह थोड़ा सा अस्पष्ट हो जाता है क्योंकि यहाँ पर स्पष्ट रूप से कोई ठोस प्रमाण इसके लिए नहीं हैं। यही कुछ इसका अर्थ है जब आप शब्द "मौखिक" का उपयोग करते हैं, इसका अर्थ कुछ भी लिखा नहीं गया था से है। परन्तु जब आप इसके बारे में एक पल के लिए सोचते हैं, तो हम जानते हैं कि कुछ बातें मिलकर हमें यह जानने में सहायता करती हैं कि मूसा ने शायद बस केवल एक ही दिन में इन कहानियों के ऊपर सोचा नहीं होगा, न ही शायद परमेश्वर ने एक ही दिन में इन कहानियों को बिना किसी मौखिक पृष्ठभूमि के बता दिया होगा। इसका एक प्रमाण यह है कि यह एक सच्चाई है कि आदिकालीन संस्कृतियाँ यहाँ तक आज के समय में भी कहानी बताने के ऊपर, अपने लोगों में प्राचीन कहानियों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में बहुत अधिक पुनरावृत्ति के द्वारा बताने में निर्भर हैं, और यह अकसर बाइबल के समय के जैसा है जब लोग इसी जैसी बातें किया करते थे। और इसका एक सबसे अधिक ठोस प्रमाण हमें हमारे सम्पूर्ण पंचग्रन्थ में इस तरीके से मिलता है, कि जो कहानियाँ निर्गमन और गिनती में पाई जाती हैं वह अकसर व्यवस्था विवरण में दोहराई गई हैं। और व्यवस्था विवरण की पुस्तक में, हमें ऐसा संदर्भ दिया गया है जहाँ पर मूसा उपदेश दे या प्रचार कर रहा है जो ऐसे तत्वों को सम्मिलित करता है जिसे हमें निर्गमन और गिनती की पुस्तकों में भी पाते हैं। परन्तु इनके बारे में रूचिपूर्ण बात यह है कि जबकि यह एक जैसी हैं परन्तु उसी समय यह अक्षरश: एक जैसा नहीं हैं। और इस तरह से, मूसा के दिनों में ऐसी संस्कृति थी, वहाँ पर इस्राएल के दिनों में ऐसी संस्कृति थी, जिसमें भूतकाल से कहानियों को या भूतकाल में से कथाओं को लिया जाता था, ऐसी घटनाओं को जो घटित हो चुकी थी और कैसे यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रेषित की गई थी और तब उनका उपयोग जिस संदर्भ में आप रह रहे थे, में विशेष रूप से लागू करते हुए किया जाता था। इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि आप जानते हैं कि मूसा अपने जीवन के आरम्भिक वर्षों में अपनी माता के घर में पला बढ़ा, और इसी में भी कोई सन्देह नहीं है कि उसे अपने पूर्वजों के बारे में कहानियों की जानकारी, स्वयं के एक इब्रानी होने की पहचान, अपनी ऐसी पहचान कि वह अब्राहम के वंश से आया है, की जानकारी दी गई होगी। और इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि मूसा ने इस्राएल के बुजुर्गों के साथ बातचीत की होगी, यहाँ तक कि जब वह यित्रो के पास से वापस आया, वह अपने पूर्वजों के विशेष होने के बारे में कहानियों को सीख रहा होगा। और इसलिए, यह सोचने के लिए अच्छा कारण है कि मूसा, सच्चाई में, मौखिक परम्पराओं, या कहानियों के ऊपर निर्भर रहा था, जिन्हें एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रेषित किया गया था, जब उसने पंचग्रन्थ के विभिन्न भागों को लिखा था। - डॉ. रिचर्ड एल, प्रॉट, जूनीयर

मौखिक परम्पराओं का प्रभाव मूसा की जलती हुई झाड़ी में से बुलाहट के उल्लेखनीय गुणों की व्याख्या करता है। सुनिए निर्गमन 3:13, 16 में क्या घटित हुआ:

मूसा ने परमेश्वर से कहा, "जब मैं इस्राएलियों के पास जाकर उन से यह कहूँ, 'तुम्हारे पितरों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है,' तब यदि वे मुझ से पूछें, 'उसका क्या नाम है?' तब मैं उनको क्या बताऊँ?" ...

"'[उन] से कह, तुम्हारे पितर – अब्राहम, इसहाक, और याकूब के परमेश्वर, यहोवा - ने मुझे दर्शन दिया है (निर्गमन 3:13, 16)।

यहाँ पर ध्यान दें कि परमेश्वर ने बस केवल मूसा से उसे "प्रभु" – या *यहोवा* – "अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर" ही कहने के लिए कहा। किसी ने अवश्य ही मूसा को इस ईश्वरीय नाम *यहोवा* और कुलपतियों की परम्पराओं के बारे शिक्षा दी होगी। अन्यथा, परमेश्वर के कथन से असँख्य प्रश्न मूसा के मन में उठ खड़े होते। परन्तु, जैसा कि हम यहाँ पर देखते हैं, मूसा परमेश्वर के दिशा निर्देशों को ग्रहण करने के लिए इतना अधिक तैयार था कि उसने इसके बारे में किसी तरह का कोई प्रश्न नहीं किया।

हम यहाँ तक कि और भी अधिक विश्वस्त हो सकते हैं कि मूसा के स्रोतों में स्वतंत्र दस्तावेज भी सम्मिलित थे जब उसने पंचग्रन्थ को संकलित किया। हम इन्हें निर्गमन 24:7 जैसे स्थानों में देखते हैं। यह वचन संकेत देता है कि

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

मूसा ने "वाचा की पुस्तक" को एक स्वतंत्र दस्तावेज के रूप में लिखा जिसे उसने बाद में निर्गमन की पुस्तक में सम्मिलित कर दिया। और गिनती 21:14-15 में, मूसा ने भौगोलिक संदर्भों को पहले से विद्यमान एक पुस्तक "यहोवा के संग्राम" नामक पुस्तक में से उद्धृत किया है।

इसके अतिरिक्त, उत्पत्ति 5:1 में, हम पढ़ते हैं जो कि बाहरी साहित्यिक स्रोत "आदम की वंशावली की पुस्तक" नामक पुस्तक में से लिया गया एक स्पष्ट उद्धरण है। जैसा कि यह साहित्यिक अनुवाद संकेत देता है, मूसा ने शायद इन सूचनाओं का उल्लेख किया जिन्हें उसने किसी एक "पुस्तक" या इब्रानी भाषा में סֵפֶר (*सिफेर*) "कुंडल पत्र" – आदम की वंशावली के बारे में प्राप्त किया था।

इसके अतिरिक्त, निर्गमन 17:14 एक युद्ध के उल्लेख का विवरण देता है। इस वचन में, परमेश्वर ने मूसा को आदेश दिया कि:

इस बात को पुस्तक में लिख ले और यहोशू को सुना दे (निर्गमन 17:14)।

परमेश्वर की मूसा को दी हुई आज्ञा यह संकेत देती है कि मूसा ने स्वतंत्र रूप से कम से कम कुछ घटनाओं का उपयोग किया जो कि सम्पूर्ण पंचग्रन्थ के लिखे जाने से पहले घटित हुई थी।

जब आप पंचग्रन्थ को देखते हैं जो कि जैसा आज दिखाई देता है, विशेषकर उत्पत्ति की पुस्तक की घटना में, तो पाते हैं कि मूसा वास्तव में बहुत ही प्राचीन दस्तावेजों को इसमें समाहित कर रहा था। हम जानते हैं कि मूसा वास्तव में चार भाषाओं को जानता था। मूसा मिस्री भाषी था। वह साथ ही इब्रानी भी जानता था क्योंकि वह इब्रानी परिवार के द्वारा पाला पोसा गया था; उसकी माता उसके लिए एक दाई थी। हम जानते हैं कि वह उसके दिनों की सामान्य भाषा, अंतरराष्ट्रीय व्यापार और राजनयिक भाषा जिसे अक्कादी के नाम से पुकारा जाता है, को भी जानता होगा। और वह साथ अरामी को भी जानता होगा, क्योंकि अरामी एक ऐसी भाषा थी जिसे इस्राएली अपने आरम्भिक वर्षों – अब्राहम, इसहाक और याकूब और अन्यों के दिनों में बोलते रहे थे। इसी तरह से, मूसा एक बहुत ही, बहुत ही अच्छी तरह से, प्रशिक्षित, शिक्षित व्यक्ति था, और ऐसा प्रगट होता है कि उसने उत्पति की पुस्तक की संरचना को निर्मित किया जो हमें यह बता रही है कि उसने निश्चित दस्तावेजों को उपयोग किया, क्योंकि यह दस बार ऐसा कहती है कि, "यह वह पीढ़ियाँ हैं...। " या "इनका विवरण इस तरह से है...।" और इसी तरह की अन्य बातें। और ऐसा प्रगट होता है कि यह वह विवरण हैं जिन तक उसकी पहुँच थी जिसे उसने संभाल कर रखा था, जिनका उसने अनुवाद किया, शायद, कुछ मूल भाषा से, आंशिक रूप से अरामी से, या कदाचित पहले के कनानी भाषा से, इब्रानी में जिसे उसके लोगों के लिए लिखा जिनके लिए वह उत्पत्ति की पुस्तक लिख रहा था। ऐसा आवश्यक नहीं था कि यही कुछ उत्पत्ति की पुस्तक के पश्चात भी घटित हुआ। जब एक बार आप लैव्यव्यवस्था और गिनती और आगे की पुस्तकों तक पहुँचते हैं और निश्चित रूप से निर्गमन और व्यवस्था विवरण तक, जब एक बार आप पंचग्रन्थ की अन्तिम चारों पुस्तकों को प्राप्त कर लेते हैं। मूसा उन्हें वहीं पर लोगों के मध्य में, उनकी परिस्थिति में लिख रहा है, वह ठीक वहीं पर है, वह इसे घटित होने दे रहा है। और सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण यह है, कि परमेश्वर इसे घटित होने दे रहा है, क्योंकि इन पुस्तकों का एक बहुत बड़ा भाग परमेश्वर के वे शब्द हैं जो कि उसके भविष्यद्वक्ता के माध्यम से आए हैं। - डॉ. डगलस स्टूट्र

पंचग्रन्थ के लिए मौखिक और साहित्यिक स्रोतों की पहचान कर लेने के अतिरिक्त, जब सुसमाचारवादी मूसा आधारित लेखनकार्य की मौलिकता के बारे में बात करते हैं तो वह यह स्वीकार करते हैं कि पंचग्रन्थ वास्तव में एक जटिल प्रक्रिया के माध्यम से लिखा गया।

प्रक्रिया – इस बात के साथ आरम्भ करते हुए कि मूसा ने अधिकांश पंचग्रन्थ मौखिक कविता पाठ के द्वारा लिखा इससे पहले कि इसे वास्तव में लिखा गया था। उसकी निर्गमन और व्यवस्था विवरण में दिया गया उपदेश

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

हमें इसके प्रति स्पष्ट उदाहरणों को प्रदान करता है। और संभावना यह है कि पंचग्रन्थ के अन्य अंश भी इस्राएल में सबसे पहले मौखिक रूप से ही आए थे और बाद में इन्हें लिख लिया गया था।

इस बात की भी संभावना बहुत अधिक है कि मूसा ने लिपिक – सचिव या शास्त्रियों की सहायता – पंचग्रन्थ के संकलन के लिए ली थी। हम जानते हैं कि मूसा मिस्र के दरबार में शिक्षित किया गया था। इसलिए, वह अधिकारिक दस्तावेजों को लिखने के लिए शास्त्रियों और सचिवों के उपयोग के अच्छी तरह से स्थापित अभ्यास के उपयोग के बारे में जानता होगा। इस्राएल का एक अगुवा होने के नाते, मूसा ने शायद लिपिकों को लिखने के लिए, यदि पूरा नहीं तो पंचग्रन्थ के कुछ अंश को अपने निरीक्षण के अन्तर्गत अधिकृत किया था।

पवित्रशास्त्र स्पष्ट करता है कि बाइबल के अन्य प्रेरणा-प्रदत्त लेखकों ने भी सचिवों का उपयोग किया था। उदाहरण के लिए, यिर्मयाह 36:4 में, भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह ने स्पष्ट रूप से अपने शिष्य बारूक को निर्देश दिया था कि वह उसके शब्दो को लिख ले।

हम इस अभ्यास को पंचग्रन्थ में असमान साहित्यिक शैलियों के रूप में मूल रूप से देखते हैं। उदाहरण के लिए, कथात्मक शैलियाँ जो उत्पत्ति के विभिन्न अंशों में प्रकट होती हैं एक दूसरे से बहुत ज्यादा भिन्न हैं। और व्यवस्था विवरण की इब्रानी और पंचग्रन्थ की अन्य पुस्तकों के फार्मूलाबद्ध और दुहराव के मध्य उल्लेखनीय भिन्नता को देखते हैं। इन सभी संभावनाओं में, इस तरह की विभिन्नताएँ विभिन्न शास्त्रियों के द्वारा किए हुए कार्यों को प्रदर्शित करती हैं।

मूसा आधारित लेखनकार्य की मौलिकता का सरोकार न केवल उन स्रोतों और प्रक्रियाओं से हैं जिन्हें मूसा ने उपयोग किया, परन्तु साथ ही मूसा के समय के पश्चात् पंचग्रन्थ के अद्यतन से भी है।

अद्यतन करना – जैसा कि हमने देखा, आलोचनात्मक व्याख्याकार सम्पूर्ण पंचग्रन्थ को इसके पूर्ण आकार में पहुँचने के लिए इस्राएल के बन्धुवाई में से लौट आने के पश्चात् को मानते हैं। परन्तु सुसमाचारवादियों यह मानते हैं कि पंचग्रन्थ मूसा के दिनों में ही निर्मित हो गया था। परन्तु फिर भी, पंचग्रन्थ के कुछ अंश ऐसे हैं जो कि मूसा के दिनों के पश्चात् थोड़े से संपादकीय रूप से अद्यतन किए गए थे।

अब, हम बहुत ही अधिक सावधान रहने की आवश्यकता है जब हम पंचग्रन्थ के विशेष तत्वों की तिथि निर्धारित करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ व्याख्याकारों ने यह सुझाव दिया है कि प्रत्येक संदर्भ जो "पलिश्तियों" का उल्लेख करता है, को मूसा के दिनों के पश्चात् लिखा हुआ होना चाहिए। परन्तु यह दृष्टिकोण कम से कम तीन कारणों से समझाने के लिए कमजोर हैं। पहला, उस क्षेत्र में पलिश्तियों के अस्तित्व का प्रति पुरातात्विक विवरण विवादित है। दूसरा, मूसा ने हो सकता है कि शब्द "पलिश्तीन" (जिसका अर्थ "यात्री" होता है) का उपयोग समाजशास्त्रीय पदनाम के लिए उपयोग किया होगा। और तीसरा, चाहे शब्द "पलिश्तीन" मूसा के दिनों में नहीं जाना जाता, इसका सदैव संभावना रही है कि शब्द "पलिश्तीन" का उपयोग सामान्य रूप से मूसा के दिनों के पश्चात् के पाठकों के लिए थोड़ा अद्यतन करने के लिए प्रस्तुत किया गया होगा।

कुछ इसी तरह से, व्याख्याकारों ने यह तर्क दिया है कि उत्पत्ति 36:21-43 में एदोमी शासकों की सूची मूसा के जीवनकाल से बहुत आगे चली जाती है। परन्तु उत्पत्ति में दी हुई एदोमी शासकों की सूची की पहचान निश्चित नहीं है। और यह भी संभावना है कि ये संदर्भ सूचियों के केवल थोड़े से विस्तारों को सम्मिलित करते हैं जिन्हें मूसा के समय के पश्चात् जोड़ा गया था।

पंचग्रन्थ में उत्पत्ति 14:14 में अद्यतन का एक छोटा सा स्पष्ट उदाहरण मिलता है। जहाँ हम पढ़ते हैं कि:

> **यह सुनकर कि उसका भतीजा बन्दी बना लिया गया है, अब्राम ने अपने तीन सौ अठारह शिक्षित, युद्ध कौशल में निपुण दासों को लेकर जो उसके कुटुम्ब में उत्पन्न हुए थे, अस्त्र-शस्त्र धारण करके दान तक उनका पीछा किया (उत्पत्ति 14:14)।**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

यह संदर्भ यह कहता है कि अब्राहम ने उसके शत्रुओं का "पीछा दान तक" किया। परन्तु यहोशू 10:47 से हम सीखते हैं कि यहोशू के दिनों तक उत्तरी क्षेत्र को दान का नाम नहीं दिया गया था। इस तरह से, पवित्रशास्त्र स्वयं संकेत देता है कि उत्पत्ति 14:14 एक अद्यतन किए हुए स्थान को प्रदर्शित करता है। इस तरह की आधुनिकता उत्तरोत्तरकालीन पाठकों की सहायता करेगी कि वे स्वयं को अब्राहम की जिस भूगोल को वे जानते थे, उसके साथ सम्बद्ध करने में सहायता करेगी। और ऐसी संभावना है कि पंचग्रन्थ के अन्य संदर्भ कुछ इसी तरह से अद्यतन किए गए थे।

कदाचित् सबसे अधिक ज्ञात् और विशिष्ठ अद्यतन पंचग्रन्थ में व्यवस्था विवरण 34 में मूसा की मुत्यु का अभिलेख में मिलता है। परन्तु यहाँ पर भी, हमारे पास इस्राएल को व्यवस्था देने वाले के साथ क्या कुछ के विवरण के एक परिशिष्ठ मात्र से ज्यादा कुछ नहीं है।

इन जैसे छोटे अद्यतन के अतिरिक्त, पंचग्रन्थ की भाषा भी साथ ही अद्यतन की गई जैसे जैसे इब्रानी भाषा में विकास होता गया। समकालीन अनुसंधान दृढ़ता से सुझाव देते हैं कि मूसा ने एक ऐसी भाषा में लिखा जिसे विद्वानों ने "आदि-इब्रानी" कह कर पुकारा है। मिस्र में पाए गए अंतरराष्ट्रीय दस्तावेजों से मिले प्रमाणों से, यह जाना गया है कि "अमर्णा शब्द" संकेत देते हैं कि इस तरह की इब्रानी भाषा बड़ी घनिष्ठता के साथ मूसा के दिनों में कनानी बोलियों के साथ सम्बद्ध थी। परन्तु यह भाषा पंचग्रन्थ में पाई जाने वाली पारम्परिक इब्रानी मूलपाठ से बहुत पहले की भाषा थी।

पुराने नियम की भाषा का प्रश्न बहुत ही आकर्षित करने वालों में से एक है। कब यह भाषा...कहाँ से यह आई? कहाँ से यह प्रगट हुई? यह लोगों को एक लम्बे समय से उलझन में डालने वाला रहा है क्योंकि पुरातत्व से मिलने वाले प्रमाण यह कहते हैं कि, क्या वहाँ पर इब्रानी भाषा, प्राचीन इब्रानी भाषा थी भी या नहीं? हमारे पास थोड़े से मूलपाठ हैं जिन्हें निकट भूतकाल में खुदाई से प्राप्त किया गया है। और, वह सभी बहुत देरी से मिले हैं। वह सभी मूसा के समय के बहुत बाद में प्राप्त हुए हैं...और इसलिए आप उनके साथ क्या करेंगे? ठीक है, हमारे पास तेरह सौ वर्षों के पश्चात्, चौदहवीं ई. पू., सदी के प्रमाण मिले हैं, जो कि एक पूरे कूटनीतिक पत्राचार का संग्रह है, एक ऐसा अभिलेख जिसे खुदाई में पाया गया है, न कि कनान, इस्राएल की भूमि में – जो बाद में इस्राएल की भूमि बन जाएगा – अपितु मिस्र में पाया गया है...और वे अक्कादी भाषा में लिखा हुआ है, जो कि एक ऐसी भाषा है जो वास्तव में मेसोपोटामिया में उत्पन्न हुई, परन्तु यह एक सामान्य भाषा है, यह उस समय की राजनयिक कूटनीति की अंतराष्ट्रीय भाषा है। परन्तु यह कनानी लोग थे, यह स्थानीय लोग थे जो मिस्र के शासकों को लिख रहे थे, और लिखने के समय उनके पास वहाँ पर टिप्पणी के लिए थोड़ा सा हाशिए का स्थान था, और यह कनानी भाषा में लिखा हुआ है। और अब यही हमारा सम्पर्क सूत्र है। और कनानी भाषा ही है जो हमारा सम्पर्क मूसा के समय की इब्रानी के साथ स्थापित करती है। अब, इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि हमारे पास किसी तरह का कोई विवरण नहीं मिलता है, हमारे पास मूसा के युग के समय की इब्रानी का कुछ भी नहीं मिलता है, परन्तु यही हमारा सम्पर्क सूत्र है, यही हमारे सम्बन्ध को जोड़ने वाला सेतु है। इसलिए, यह टिप्पणी वाले कनानी भाषा के हाशिए से आगे बढ़ता है जो कि हमारे पास मूसा के समय की इब्रानी के साथ से उस इब्रानी के साथ सम्बन्ध निर्मित करता है जिसे हम उस इब्रानी के रूप में जानते हैं जो कि बाइबल आधारित इब्रानी का मापदण्ड हैं जिसमें अधिकांश बन्धुवाई-पूर्व इब्रानी और वह मूलपाठ जो कि बन्धुवाई में से निकल कर आ रहा है, मिलता है। इस तरह से यही हमारा सम्पर्क सूत्र है। यह अप्रत्यक्ष है, परन्तु यह वास्तविक है, और यह ठोस है। - डॉ. टॉम पेटर

इस्राएल की राजशाही के समय, 1000 ई. पू., और 600 ई. पू., के मध्य में, भाषा का विकास उस रूप में हुआ जिसे हम आज पुराना या "पुरातत्वीय-इब्रानी" के नाम से जानते हैं। बहुत से विद्वान सहमत होंगे कि पंचग्रन्थ के अंश इस इब्रानी भाषा की अवस्था के समान हैं, जैसे कि निर्गमन 15 और व्यवस्था विवरण 32 के भाग।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

परन्तु पंचग्रन्थ का विशाल बहुमत बड़ी निकटता के साथ इसके शब्दावली, वर्तनी और व्याकरण में जिसे हम आज के समय "शास्त्रीय इब्रानी" के नाम से जानते हैं, से मिलती जुलती है, जो कि ऐसी अवस्था वाली विकसित इब्रानी भाषा है जिसका उपयोग लगभग आठवीं सदी के मध्य और ई. पू., आरम्भिक छठी सदी के मध्य में होता था।

इस प्रमाण से, यह प्रगट होता है कि आदिकालीन-इब्रानी जिसका उपयोग स्वयं मूसा ने किया, को पुरातत्वीय-इब्रानी के साथ अद्यतन किया गया था। तब इसके पश्चात् इसे शास्त्रीय इब्रानी में आधुनिकीकरण किया गया जैसा कि यह हमें आज इब्रानी बाइबल में मिलती है।

यह स्मरण रखना सदैव महत्वपूर्ण है कि यीशु और उसके प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के दिनों में, पंचग्रन्थ की इब्रानी भाषा पहले से ही कई प्रकार के परिवर्तनों में से निकल कर जा चुकी थी। परन्तु यह तथ्य यीशु या उसके अनुयायियों को पंचग्रन्थ का अध्ययन करने के लिए हताश नहीं करता है कि जैसा कि वे विश्वासयोग्यता के साथ जो कुछ मूसा ने स्वयं लिखा था, को प्रस्तुत करते हैं। इस तरह से, मसीह के आज के अनुयायी होने के नाते, हम आसानी से सुनिश्चित हो सकते हैं कि पंचग्रन्थ, जैसा कि यह अब हमारे पास है, विश्वासयोग्यता के साथ मूसा के मूल लेखों को प्रस्तुत करता है।

अभी तक, हमने आधुनिक सुसमाचारवादी दृष्टिकोणों को देखा और कुछ महत्वपूर्ण पूर्वधारणाओं को स्पर्श किया जिन्हें सुसमाचारवादी पंचग्रन्थ तक लेकर आते हैं। और जैसा कि हमने ध्यान दिया है कि कैसे सुसमाचारवादी बाइबल के इस भाग के ग्रन्थकार के प्रति देखते हैं। अब, आइए हम कुछ उन तरीकों की ओर ध्यान दें जिनमें इन दृष्टिकोणों ने व्याख्यावादी रणनीतियों को प्रभावित किया है जिन्हें सुसमाचारवादी अनुसरण करते हैं।

व्याख्यावादी रणनीतियाँ

ऐसे कई तरीकों हैं जिनमें इन व्याख्यावादी रणनीतियों का विवरण किया जा सकता है, परन्तु हम तीन मुख्य दिशाओं के बारे में बात करेंगे जिनका अनुसरण सुसमाचारवादी ने किया है। प्रथम, हम उस पर ध्यान देंगे कि जिसे हम विषयात्मकवादी व्याख्या कह कर पुकारते हैं। फिर हम ऐतिहासिक व्याख्या की खोज करेंगे। और अन्त में, हम साहित्यिक व्याख्या की जाँच करेंगे । ये तीनों रणनीतियाँ अत्याधिक परस्पर एक दूसरे के ऊपर निर्भर हैं और एक दूसरे के बिना कार्यरत् नहीं होती हैं। परन्तु वे भिन्न महत्वों को प्रस्तुत करती हैं, इसलिए यह इन्हें, विषयात्मकवादी व्याख्या से आरम्भ करते हुए, व्यक्तिगत् रूप से देखना ज्यादा सहायतापूर्ण रहेगा।

विषयात्मकवादी

विषयात्मकवादी व्याख्या में, हम यह मानते हैं कि पंचग्रन्थ एक दर्पण के समान हैं जो उन विषयों को प्रदर्शित करता है जो हमारे लिए अति महत्वपूर्ण हैं। सुसमाचारवादियों ने वैधानिक रूप से महत्वपूर्ण निश्चित विषयों या मुद्दों को बाइबल के इस भाग में महत्व दिया है। परन्तु जैसा कि हम देखेंगे, पंचग्रन्थ की प्रत्येक पुस्तक की अपनी प्राथमिकताओं की सूची है। इसिलए मूसा ने स्वयं हो सकता इन विषयों के ऊपर महत्व दिया होगा या नहीं। सदियों से इस दृष्टिकोण ने मसीही व्याख्या की विशेषता को प्रस्तुत किया है।

विषयों की सूची जिन पर मसीहियों ने महत्व दिया है वह बहुत ही लम्बी है। कुछ ने व्यक्तिगत् प्रश्नों और समकालीन विवादों के ऊपर जोर दिया है। दूसरों ने पंचग्रन्थ का उपयोग अपने दृष्टिकोणों को परम्परावादी विधिवत् धर्मविज्ञान के समर्थन के लिए किया है। उदाहरण के लिए, पंचग्रन्थ परमेश्वर के बारे में बहुत सी बातों को प्रगट करता है। यह साथ ही मनुष्य के विभिन्न पहलूओं के ऊपर बहुत बड़ी मात्रा में समय को व्यतीत करता है । और यह सामान्य रूप से बाकी की सृष्टि के लिए बहुत अधिक ध्यान को खर्च करता है।

अब, विषयात्मकवादी व्याख्या की एक सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि यह अकसर इस तथ्य के मूल्य को निम्न कर देता है कि मूसा के मूल विषय वे इस्राएली थे जो उसका अनुसरण प्रतिज्ञात् भूमि की ओर कर रहे थे। और क्योंकि मूल संदर्भ के बारे में थोड़ा सा ध्यान दिया जाता है, विषयात्मकवादी व्याख्याएँ अकसर थोड़ा सी ही अधिक ध्यान छोटे विषयों की ओर देती हैं।

परन्तु फिर भी, हमें सदैव यह ध्यान में रखना चाहिए कि नया नियम पंचग्रन्थ के प्रति इस दृष्टिकोण को न्यायसंगत ठहराता है। यीशु और नए नियम के लेखकों ने मूसा की पूस्तकों की ओर देखा जब उन्होंने विश्वास के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

द्वारा धर्मी ठहराए जाना, तलाक, विश्वास और कार्य और बाइबल के इस भाग में अपेक्षाकृत छोटे विषयों के समूहों जैसे विषयों का निपटारा किया। इसलिए, जब तक हम पवित्रशास्त्र के इस भाग मे दिए हुए विषयों को न पढ़ने के लिए सचेत हैं, पंचग्रन्थ के लिए विषयात्मक दृष्टिकोण मूल्यवान हो सकती है।

विषयात्मकवादी व्याख्या की व्याख्यावादी रणनीति के अतिरिक्त, सुसमाचारवादीयों में यह भी सामान्य बात पाई जाती है कि पंचग्रन्थ की खोज उसके साथ की जाए जिसे हम ऐतिहासिकवादी व्याख्या कह कर पुकार सकते हैं।

ऐतिहासिकवादी

सुसमाचारवादी न केवल यह विश्वास करते हैं कि पंचग्रन्थ में दिए हुए धर्मवैज्ञानिक विषय सच्चे हैं। अपितु, यीशु और उसके प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के उदाहरणों का अनुसरण करते हुए, जो यह भी विश्वास करते थे कि पंचग्रन्थ इतिहास का एक सच्चा अभिलेख है। इसी कारण से, सुसमाचारवादी अकसर पंचग्रन्थ की व्याख्या जो कुछ अतीत में हुआ की खोज करने के तरीके से करते हैं।

हमने पहले ही उल्लेख किया है कि विषयात्मकवादी व्याख्यावादी रणनीतियाँ पंचग्रन्थ के साथ एक दर्पण के रूप में व्यवहार करती हैं जो उन विषयों को प्रतिबिम्बित करता है जो हमारी रूचि के होते हैं। परन्तु, ऐतिहासिकवादी विश्लेषण पंचग्रन्थ को इतिहास की एक खिड़की की तरह व्यवहार करता है। हम मूसा की पुस्तकों के माध्यम से देखते हैं, जैसी यह हैं वैसी ही, इतिहास को खोज करने के लिए जो इनकी पृष्ठभूमि में पड़ा हुआ है।

उत्पत्ति इतिहास को सृष्टि से यूसुफ के दिनों तक खोज करती है। निर्गमन की मुख्य कहानी की डोरी यूसुफ की मृत्यु से लेकर उस समय की ओर जाती है जब इस्राएल मूसा के साथ सीनै की पहाड़ी के पैरों के नीचे तम्बूओं में रह रहा था। लैव्यव्यवस्था कुछ व्यवस्थाओं और अनुष्ठानों का विवरण देता है जिन्हें मूसा ने सीनै की पहाड़ी पर प्राप्त किया था। गिनती सीनै पहाड़ से मोआब के मैदानों में निर्गमन में आने वाली पहली और दूसरी पीढ़ियों के आगे बढ़ाने की खोज करता है। और व्यवस्था विवरण मोआब के मैदानों में इस्राएल को मूसा के दिए हुए उपदेशों का वर्णन करना करता है, जब वे कनान में प्रवेश करने पर थे। ऐतिहासिकवादी व्याख्या में, सुसमाचारीवादियों ने इस अपेक्षाकृत स्पष्ट ऐतिहासिक दिशा के ऊपर ध्यान केन्द्रित किया है।

ऐतिहासिक व्याख्या चाहे जितनी भी मूल्यवान् हो, पंचग्रन्थ के प्रति इस दृष्टिकोण की अपनी सीमाएँ भी हैं। बहुत कुछ विषयात्मक विश्लेषण की तरह ही, ऐतिहासिकवादी व्याख्या अपेक्षाकृत थोड़ा सा ध्यान मूसा और उसके मूल पाठकों की ओर केन्द्रित करती है। इसकी अपेक्षा, ध्यान उस ओर है जो कुछ परमेश्वर ने विभिन्न समयाविधियों में पंचग्रन्थ की पुस्तकों के लिखे जाने से पहले किया। परमेश्वर ने आदम और हव्वा के क्या किया? नूह की जल प्रलय का क्या विशेषता थी? कैसे अब्राहम ने परमेश्वर के साथ वार्तालाप किया? उस समय परमेश्वर क्या पूरा किया जब इस्राएल ने समूद्र को पार कर लिया? यह खोज के लिए वैध विषय हैं, परन्तु वे मूसा को इसके लेखक और इस्राएल को इसके मूल पाठक होने की विशेषता को निम्न कर देते हैं।

स्पष्ट है, कि सुसमाचारवादी कई तरीकों से पंचग्रन्थ की विषयात्मकवादी व्याख्या और ऐतिहासिकवादी व्याख्या से लाभ को प्राप्त किए हैं। परन्तु समकालीन दशकों में, एक तीसरी दिशा सामने की ओर निकल कर आई है, जिसे हम साहित्यवादी व्याख्या कह कर पुकार सकते हैं।

साहित्यवादी

जैसा कि हमने देखा था, विषयात्मक विश्लेषण पंचग्रन्थ के साथ एक दर्पण के समान व्यवहार करता है जो कि इसके विषयों को प्रतिबिम्बित करता है जो हमारे लिए अति महत्वपूर्ण हैं। ऐतिहासिकवादी विश्लेषण पंचग्रन्थ को पंचग्रन्थ के लिखे जाने से पहले ऐतिहासिक घटनाओं के रूप में देखता है। इनकी तुलना में, साहित्यवादी विश्लेषण पंचग्रन्थ के साथ एक चित्र के रूप, एक साहित्य कार्य की कला के रूप में जिसे विशेष तरीके से मूल पाठकों को प्रभावित करने के लिए निर्मित किया गया, में व्यवहार करता है। आवश्यक रूप से, साहित्यवादी व्याख्या

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

पूछती है: कि कैसे मूसा ने अपने मूल इस्राएली पाठकों को प्रभावित करने की इच्छा की जब वह पंचग्रन्थ को लिख रहा था?

यह कहना उचित होगा कि मूसा के पास बहुत से प्रयोजन थे। परन्तु इन प्रयोजनों को सामान्य शब्दों में विवरण देना सहायतापूर्ण होगा। इसलिए, हम मूसा के उद्देश्य को: इस्राएल के लिए परमेश्वर की ओर से नियुक्त अगुवे के तरीके में वर्णित करेंगे,

मूसा ने पंचग्रन्थ को प्रतिज्ञात् भूमि की विजय और उसमें बसने के लिए परमेश्वर के प्रति इस्राएल को विश्वायोग्यता के साथ सेवकाई करने के लिए तैयार करने लिए लिखा।

कल्पना में विषयों के एक वर्गीकरण को स्पर्श करने, या केवल ऐतिहासिक रूचियों के कारण घटनाओं के निष्पादन करने की अपेक्षा, एक या दूसरे तरीके से पंचग्रन्थ में प्रत्येक विषय और ऐतिहासिक अभिलेख इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए लिखा गया था।

साहित्यवादी व्याख्या यह स्वीकार करती है कि मूसा समय की दो अवधियों के मध्य में खड़ा हुआ जब उसने पंचग्रन्थ को लिखा। एक तरफ तो, मूसा ने उसके बारे में लिखा जिसे हम अतीत का "वह संसार" कह कर पुकार सकते हैं, जिसमें ऐसी घटनाएँ अतीत में घटित हुई हैं। उत्पत्ति में घटित हुई घटनाएँ मूसा के दिनों से बहुत पहले घटित हुई थी। निर्गमन और लैव्यव्यवस्था में सम्मिलित घटनाएँ मिस्र से निकल कर आई पहली पीढ़ी के समय के ऊपर ध्यान केन्द्रित करती हैं। जब मूसा ने पंचग्रन्थ की प्रत्येक पुस्तक को लिखा तो उसके मन में अतीत के ये विभिन्न समय ध्यान में थे।

तथापि, दूसरी तरफ,मूसा ने "उनके संसार" के लिए उसके मूल पाठकों को लिखा। मूसा ने "वह संसार" जो अतीत में था से शिक्षाओं को अपने मूल पाठकों को शिक्षा देने के लिए लिया कि कैसे उन्हें सोचना चाहिए, कार्य करना चाहिए और परमेश्वर की सेवा "उनके संसार" में करनी चाहिए। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, मूसा ने अतीत के "वह संसार" के बारे में इस तरीकों से लिखा जो कि "उनके संसार" के साथ सम्बन्ध स्थापित कर सके।

मूसा ने उसके मूल पाठकों को तीनों मुख्य तरीकों से अतीत के साथ सम्बन्धित कर दिया। उसने उन्हें अतीत का विवरण दिया जिसने उसके पाठकों के समकालीन अनुभवों के उद्गमों और पृष्ठभूमियों को स्थापित किया। उसने साथ ही उन्हें आदर्श दिए जिनका वे अनुसरण कर सकते थे और इन्हें अस्वीकार कर सकते थे। और उसके उसके पाठकों के संसार के लिए प्रतिछाया या पूर्वाभास के रूप में विवरणों का आकार दिया।

कई बार, मूसा के ये सम्पर्क अपेक्षाकृत स्पष्ट थे। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 15:12-16 में, मूसा ने उसके पाठकों को परमेश्वर की मिस्र से ले आने की प्रतिज्ञा की पृष्ठभूमि को बताया है। यह प्रतिज्ञा उनके दिनों में पूरी हुई थी। उत्पत्ति 2:24 में, मूसा ने आदम और हव्वा के विवाह का विवरण परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों के विवाह के लिए एक आदर्श के रूप में दिया है। और उत्पत्ति 25:23 में, मूसा ने सूचित किया है कि याकूब और एसाव के मध्य उनकी माता के गर्भ में का संघर्ष उनके दिनों में उसके मूल इस्राएलियों और एदोमियों के मध्य होने वाले संघर्ष की प्रतिछाया थी।

अतीत का "वह संसार" और "उनके संसार" के मध्य में स्पष्ट सम्बन्ध यहाँ और वहाँ पर पंचग्रन्थ में दिखाई देता है। परन्तु अधिकांश भागों में, यह सम्पर्क अस्पष्ट है। इसलिए साहित्यवादी व्याख्या का मुख्य कार्यों में से एक यह समझना है कि कैसे मूसा ने अतीत के "वह संसार" और मूल पाठकों के "उनके संसार" में सम्बन्ध स्थापित किया।

सदियों से, पंचग्रन्थ की व्याख्या ने साहित्यिकवादी विश्लेषण से बहुत ज्यादा विषयात्मकवादी और ऐतिहासिकवादी रणनीतियों के ऊपर जोर देने से किया है। इसलिए, मूसा की पुस्तकों के ऊपर हमारे अध्यायों में, हमने अपने अधिकांश समय को साहित्यिक व्याख्या में व्यतीत करेंगे। हम इस बात को खोल देंगे कि कैसे मूसा ने उसकी प्रत्येक पुस्तक की विषय वस्तु को पृष्ठभूमियाँ, आदर्श और उसके पाठकों के लिए प्रतिछाया को प्रदान किया

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

है। हम यह खोज करेंगे कि मूसा ने उसके मूल पाठकों के लिए क्या जोर दिया, कैसे उसने उनके जीवनों से उसकी पुस्तकों के सम्बन्धों को स्थापित किया, और कैसे उसने मूल इस्राएली पाठकों को उनके दिनों में परमेश्वर की विश्वासयोग्य सेवकाई की ओर मार्गदर्शन दिया है।

सारांश

पंचग्रन्थ के इस परिचय में हमने बाइबल के इस भाग के लिए आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोणों के महत्वपूर्ण गुणों की जाँच की है। हमने यह ध्यान दिया है कि कैसे आलोचनात्मकवादी व्याख्याकारों की पूर्वधारणाओं ने पंचग्रन्थ के ग्रन्थकार और विशेष तरह की व्याख्याओं के निश्चित दृष्टिकोणों की ओर नेतृत्व किया है। हमने आधुनिक सुसमाचारवादी दृष्टिकोणों को भी देखा है और यह देखा है कि कैसे आधुनिक सुसमाचावादियों की पूर्वधारणाओं ने ग्रन्थकार और व्याख्या के बहुत ही भिन्न दृष्टिकोण की ओर नेतृत्व किया है।

जब हम निरन्तर पंचग्रन्थ के अध्ययन में आगे की ओर बढ़ते हैं, हम देखेंगे कि ये परिचयात्मक सावधानियाँ कई बार सामने की ओर आ जाती हैं। और जैसे वे आती हैं, हम स्वयं को बाइबल के इस मूलभूत भाग के साथ व्यवहार करने में अधिक सुसज्जित पाते हैं। इसी के साथ हम इस तरह के प्रश्नों पर भी ध्यान देंगे: क्यों मूसा ने पंचग्रन्थ की प्रत्येक पुस्तक को लिखा? इन पुस्तकों को लिखने का मूल उद्देश्य क्या था? मूसा के मूल पाठकों के लिए पंचग्रन्थ के क्या उपयोग थे? इस तरह के प्रश्नों के उत्तर देने के साथ, हम मूसा के मूल अर्थ की ओर महत्वपूर्ण दिशा निर्देश की खोज करेंगे। और न केवल हम यह देखेंगे कि कैसे बाइबल की पहली पाँच पुस्तकों ने मूसा के दिनों में इस्राएल के विश्वास को आकार देने के लिए कार्य किया, अपितु हम यह भी खोज करेंगे कि कैसे इन पुस्तकों को मसीह के आज के हम अनुयायियों के लिए विश्वास के मापदण्ड के रूप में कार्य करना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम